TATA STEEL FOUNDATION

TATA

कुँड़ुख़ टाईम्स

https://kurukhtimes.com (अंक 02, जनवरी से मार्च 2022)

वेज वर्जन पत्रिका का त्रैमासिक मुद्रित संस्करण

Prepared by :
Addi Kurukh Chaala Dhumkuriya
Parha Akhra (Addi Akhra), Ranchi

In Association with:
TRIBAL CULTURAL SOCIETY, JAMSHEDPUR
An Ethnicity Wing of TATA STEEL FOUNDATION

TATA STEEL FOUNDATION

TATA

Tata Steel Foundation, a wholly owned subsidiary of Tata Steel Limited, was incorporated on August 16, 2016. With over 500 members spread across eleven units and two states of Jharkhand and Odisha, the Foundation is a CSR implementing organization focused upon co-creating solutions, with tribal and excluded communities, to address their development challenges reaching more than 1.5 million lives annually across 4,500 villages. The Foundation endeavors to implement change models that are replicable at a national scale, enabling significant and lasting betterment of communities proximate to Tata Steel's operating locations while embedding a societal perspective in key business decisions. The Foundation strives for excellence by ensuring that all programmes are aligned with community needs and focused upon national priority areas enabling communities to access and control resources to improve the quality of their lives with dignity.

ट्राईबल कल्चरल सोसाईटी, टाटा स्टील फाउंडेशन के अंतर्गत हाशिये पर पर आ चुके समुदायों विशेषतः अनुसूचित जनजाति के लिए ही कार्यरत इकाई है। यह एक अव्यवसायिक और स्वयंसेवी संगठन है। ट्राईबल कल्चरल सोसाईटी की यात्रा 1974 में तब से शुरू हुई जबकी इसके जनजातीय मामलों के लिए एक संयुक्त समिति के रूप में कार्य करना प्रारंभ किया। वर्ष 1983 में समिति पंजीयन अधिनियम के तहत इसका एक समिति के रूप में पंजीयन कराया गया। टाटा ट्राईबल कल्चरल सोसाईटी का मुख्य उद्देश्य जनजाति अस्मिता और धरोहर को प्रोत्साहित करना है। यह जनजातीय जीवन, संस्कृति तथा आजीविका के विभिन्न पक्षों में आर्थिक पहल के जरिए जनजातीय कला और संस्कृति के संरक्षण और संवर्द्धन से सम्बद्ध गतिविधियों पर केन्द्रित है।

कार्य के प्रमुख क्षेत्र हैं :–

- जनजातीय समुदायों की देशज अस्मिता या मौलिक पहचान का संरक्षण और संवर्द्धन।
- सशक्त समाजों के निर्माण हेतु शिक्षा को विशेषतः युवाओं के मध्य प्रोत्साहित करना।
- कौशल विकास के माध्यम से आर्थिक रूप से कमजोर वर्गों को रोजगार हेतु प्रोत्साहित करना।

Address:

In association with
TRIBAL CULTURE SOCIETY, JAMSHEDPUR
(An Ethnicity wing of TATA STEEL FOUNDATION)

E. Road Northen Town Bistupur
Jamshedpur - 834001 (Jharkhand)
Contact No. : 918579015646
jiren.topno@tatasteel.com
shiv.kandeyong@tribalculture.org

[Tolong Siki: Kurukh Times]

कुँडुख़ टाईम्स

https://kurukhtimes.com

वेब वर्जन पत्रिका का त्रैमासिक मुद्रित संस्करण

(अंक 02, जनवरी से मार्च 2022)

Consulting Editor:
Mr Kislaya
Mob. # 9431113111

Executive Editor :
Dr. Bindu Pahan, Jamshedpur
Mob # 9798956544

Co-ordinator :
Dr. Narayan Oraon, Sainda, Sisai, Gumla, Mob. # 9771163804

Assistent Co-ordinator :
Shri Bhuneshwar Oraon, Tilsiri, Ghaghra Gumla, Mob # 9798956544

Editorial Board :
1. Shri Jita Oraon, Ranchi Mob. # 9905215471
2. Shri Rajendra Bhagat, Jogo Pahar, Ranchi, Mob # 9798956544
3. Mr. Mahadeo Toppo, Ranchi Mob. # 7250212369
4. Dr. (Smt.) Shanti Xalxo, Ranchi Mob. # 9905215471
5. Dr. Meena Toppo, Ranchi Mob # 9431729685
6. Dr. Narayan Bhagat, Ranchi Mob. # 8521458677
7. Dr. Satyotam Bhagat, Jamshedpur Mob. # 9608706239

Publication Office :
Tolong Chambbi, Boreya Road, Chirondi, Nagra Dippa, PS: Bariatu, Dist. : Ranchi (Jharkhand), Pin: 834006

Publiced by :-
Addi Kurukh Chaala Dhumkuriya Parha Akhra (Addi Akhra), Ranchi

Prepared by :-
Addi Kurukh Chaala Dhumkuriya Parha Akhra (addi Akhra), Ranchi

In association with
TRIBAL CULTURAL SOCIETY JAMSHEDPUR
An Ethnicity Wing of
TATA STEEL FOUNDATION

तरपाँती	–	पईत्त पाब	–	पक्खे

1. तोलोंग सिकि (लिपि) का आधार (प्रकृति और कलाकृति) – 02
2. कुँडुख़ तोलोंग सिकि तोड़पाब (वर्णमाला) – 03
3. कुँडुख़ हहस (कुँडुख़ ध्वनियाँ) – 04
4. झारखण्ड आन्दोलन की नींव और मातृभाषा के विकास की चुनौतियाँ – 06
5. कुँडुख़ कत्थ तोलोंग सिकि उल्ला अरा हपता जतरा – 11
6. धुमकुड़िया कोरना उल्ला माघ पुनई नू – 18
7. राःजी गे (वीर बुधू भगत गे सिरनी अरगाअ़ना डण्डी) – 21
8. पड़हा–खोंड़हा बेसे कुँडुख़ तोड़पाब (कत्थडण्डी) – 23
9. धुमकुड़िया नु बिल्ली दगआ लगदम – 25
10. अखड़ा ता चाःचा पटनी – 28
11. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 एवं मातृभाषा शिक्षा सह कुँडुख़ भाषा तोलोंग सिकि तथा धुमकुड़िया विषय पर तीन दिवसीय कार्यशाला – 30
12. टी०सी०एस० द्वारा चलाये जा रहे भाषा शिक्षण केन्द्र – 31
13. मुदध कत्थसिञा (मुख्य समाचार) – 32

I. [Tolong Siki] (पेंच्छका = संपादकीय)

[illegible: paragraph in Tolong Siki script, containing "Linguistic survey of India 2011", "(संस्कार)", "(संस्कृति)"]

[illegible: paragraph in Tolong Siki script, containing "1", "12", "2020"]

Dated - 20.03.2022

- Bindu Pahan, E. Editor

तोलोङ सिकि (लिपि) का आधार

तोलोङ सिकि (लिपि) : आदिवासी भाषा, संस्कृति, रीतिरिवाज, परम्परा, विज्ञान एंव आध्यात्म का अद्भूत प्रस्तुतिकरण

(कुँडुख़ तोलोङ सिकि तोःड़पाब)

Tolong Siki Alphabet / तोलोङ सिकि वर्णमाला

(सरह तोड़) = स्वर वर्ण (Vowels)

इ i ए e उ u ओ o अ a आ ā

: (सेला) = लम्बी ध्वनि, ˙ (मितला) = नासिक्य व्यंजन सूचक, ’ (घेतला) = शब्दखण्ड सूचक,
~ (एवाँ) = नासिक्य स्वर सूचक, ‿ (रेवाँ) = लुप्ताकार र, I (हेचका) = विकारी अ

(हरह तोड़) = व्यंजन वर्ण (Consonants)

प् p	फ् ph	ब् b	भ् bh	म् m
त् t	थ् th	द् d	ध् dh	न् n
ट् ṭ	ठ् ṭh	ड् ḍ	ढ् ḍh	ण् ṇ
च् ch	छ् chh	ज् j	झ् jh	ञ् n̈
क् k	ख् kh	ग् g	घ् gh	ङ् ṅ
य् y	र् r	ल् l	व् w	ज़् ż
स् s	ह् h	ख़् x	ड़् ṛ	ढ़् ṛh

(लेक्खा) = संख्या, Numerals

0 1 2 3 4 5 6 7 8 9 10

(ख़द्दर ही कत्थ लूर अरा कत्थ बेयाँख़ो) = बच्चों का भाषा ज्ञान और भाषा विज्ञान

(पा), (बा), (मा), (ता), (दा), (ना), (का), (गा), (जा),

(पपा) = रोटी, (बबा) = पिताजी, (ममा) = Cooked rice, भात।

(पल्ले) = दाँत, (बई) = मूँह, (मेलख़ा) = Epiglottis, उप कण्ठ।

(ततख़ा) = जीभ, (दुदु) = दूध, (नरटी) = Oesophagus, ग्रासिका।

ताःका एमसाःर'ई, पल्ले, बई, मेलख़ा, होलेम चीं:ख़नर ख़द्दर।
ततख़ा, दुदहिन, नरटी तरा नतगी होलेम उज्जनर ख़द्दर।।

(कुडुख़ भाषा, संस्कृति, सामाजिक एवं प्राकृतिक अवदान तथा भाषा, विज्ञान आधारित लिपि)

3. कुँडुख़ हहस / कुँडुख़ भाषा की ध्वनियाँ (Kũṛux phonemes)

1. कुँडुख़ कत्था ही मूली सरह (कुँडुख़ भाषा की मूल स्वर स्वर ध्वनियाँ / Primary Vowel) : -

बइता सरह (मौखिक स्वर, Oral vowel)		मुँइता सरह (नासिक्य स्वर, Nasal vowel)	
सन्नी सरह (हृस्व स्वर, short vowel)	दिगहा सरह (दीर्घ स्वर, long vowel)	सन्नी सरह (हृस्व स्वर, short vowel)	दिगहा सरह (दीर्घ स्वर, long vowel)
- इ, i	- इः i:	- इँ ĩ	- इँः ĩ:
- ए, e	- एः e:	- एँ ẽ	- एँः ẽ:
- उ, u	- उः u:	- उँ ũ	- उँः ũ:
- ओ, o	- ओः o:	- ओं õ	- ओंः õ:
- अ, a	- अः a:	- अँ ã	- अँः ã:
- आ, ā	- आः ā:	- आँ ā̃	- आँः ā̃:

2. कुँडुख़ कत्था ही जोट्ठा सरह (कुँडुख़ भाषा का संयुक्त स्वर / Diphthong) :–

जोट्ठा सरह – अइ, अउ, ऐ, औ इउ, उइ, अय, अव, अँइ, अँउ, ऐं, औं, इँउ, उँइ, अँय, अँव.

3. कुँडुख़ कत्था ही मूली हरह (कुँडुख़ भाषा की मूल व्यंजन ध्वनियाँ / Primary Consonant) -

अघोष / NonVoiced		सघोष / voiced		सघोष / voiced		अघोष/NonVoiced
मौखिक अल्पप्राण Non aspirated	मौखिक महाप्राण Aspirated	मौखिक अल्पप्राण Non aspirated	मौखिक महाप्राण Aspirated	नासिक्य अल्पप्राण Non aspirated	मौखिक अल्पप्राण Non aspirated	मौखिक अल्पप्राण Non aspirated
प्	फ्	ब्	भ्	म्	- -	- -
त्	थ्	द्	ध्	न्	य्	- -
ट्	ठ्	ड्	ढ्	ण्	र्	स्
च्	छ्	ज्	झ्	ञ्	ल्	ह्
क्	ख्	ग्	घ्	ङ्	व्	ख़्
- -	- -	ड़्	ढ़्	ञ़्	- -	- -

Ku̧rux phonemes / कुँड़ुख़ ध्वनियाँ (As per minimal pair theory)

/ vowel sound / स्वर ध्वनि	/ consonant sound / व्यंजन ध्वनि
= i = इ - - इज़जो, इजगो	= p = प् - - पपला, पचरी
= e = ए - - एड़पा, एपटा	= ph = फ् - - फँसरी, फटका
= u = उ - - उगता, उड़्डु	= b = ब् - - बल्लु, बली
= o = ओ - - ओसगा, ओरोख़	= bh = भ् - - भदड़ी, भँड़की
= a = अ - - अड़ख़ा, अखड़ा	= m = म् - - मरग, मचा
= ā = आ - - आल, आरू	= t = त् - - ततख़ा, तड़री
= i: = इः - - इःमा, कीःड़ा	= th = थ् - - थड़ा, थइला
= e: = एः - - एःड़ा, नेःला	= d = द् - - दउली, दुदही
= u: = उः - - उःरा, कूःबी	= dh = ध् - - धनु, धरती
= o: = ओः - - ओःड़ा, ओःड़ा	= n = न् - - नड़गा, नड़हा
= a: = अः - - अःव, दःव, कःव	= ṭ = ट् - - टटख़ा, टमरस
= ā: = आः - - आःली, आःलो	= ṭh = ठ् - - ठरकी, ठठरा
= ĩ = इँ - - चिंचो, बिंड़ना	= ḍ = ड् - - डउड़ा, डिगची
= ẽ = एँ - - चेंड़ा, गेंड़ा	= ḍh = ढ् - - ढरा, ढेरा,
= ũ = उँ - - गुँड़ना, कुँड़ुख़	= ṇ = ण् - - भण्डा, डुण्डी
= õ = ओं - - कोंहड़ा, गोंहड़ा	= ch = च् - - चलकी, चपटा
= ã = अँ - - अँटा, खँटी	= chh = छ् - - छटका, छलका
= ā̃ = आँ - - चाँड़, काँड़	= j = ज् - - जल्ली, जंगला, जट्टा
= ĩ: = इँः - - बींःड़ी, चींःचो	= jh = झ् - - झमड़ा, झण्डा
= ẽ: = एँः - - पेंःड़े, हेंःड़े	= n̈ = ञ् - - चिञा, सिञा, कोंयछा
= ũ: = उँः - - कूँःड़, फूँःप	= k = क् - - ककड़ो, कड़मा
= õ: = ओंः - - कोंःड़ा, तोंःड़ो	= kh = ख् - - खपरा, खरपा
= ã: = अँः - - अँःत, अँःख़, सँःह	= g = ग् - - गमछा, गगरा
= ā̃: = आँः - - आँःड़को, भाँःड़ो	= gh = घ् - - घुघरी, घघरा
= ai = अइ - - कइला, चइला	= ṅ = ङ् - - झिलङो, झोलङो, डोङा
= au = अउ - - अउड़का, कउड़ी	= y = य् - - किया, जिया, पया, मया
= ae = ऐ / अय् - - नैग, कैर	= r = र् - - रसड़ी, रहटा, रोःगे, रट्टा
= ao = औ / अव् - - बौग, नौर	= l = ल् - - लट्टु, लड़ङ, लवटो
= iu = इउ - - इउन्दा, चिउरा	= v = व् - - जवा, लवा, तवा, मड़वा
= ui = उइ - - उइरा, कुइला	= ż = ज़् - - कोरज़ो, तूःज़, कुज़ी
= ãi = अँइ - - कँइत, गँइता	= s = स् - - सगड़, सिकड़ी, सुरती
= ãu = अँउ - - कँउड़, झँउड़	= h = ह् - - हड़का, हरिन, हँसली
= ãe = ऐं / अँय् - - चैंदना, पैंड़ा	= x = ख़् - - ख़न्न, ख़ज्ज, ख़ेंस
= ão = औं / अँव् - - चौंर, भौंरो	= ṛ = ड़् - - गेड़े, घोड़ो, गड़ना
= ĩu = इँउ - - इँउरा, चिँउरा	= ṛh = ढ़् - - गढ़े, बाढ़ी, उढ़ीयारना
= ũi = उँइ - - पुँइदा, सुँइतु	= ạ = अ़ - - चिअ़ना, नेअ़ना, बअ़ना

4. झारखण्ड आन्दोलन की नींव और मातृभाषा के विकास की चुनौतियाँ (कुँड़ुख़/उराँव भाषा के संदर्भ में)

– डॉ० नारायण उराँव 'सैन्दा'

भारत देश में जनगणना रिर्पोट 2011 (भाषायी) सभी जनों के लिए समर्पित है। *गूगल से।

Census of India - 2011 (Linguistc) के अनुसार भारत में कुल 121 अनुसूचित तथा गैर अनुसूचित भाषाओं को 05 भाषा परिवार के समूहो में वर्गीकृत किया गया है। इनमें से 22 भाषाओं को 8वीं अनुसूची में स्थान प्राप्त हुआ है। इन 22 में से 15 इंडो–यूरोपियन, 01 आष्ट्रो–एषियाटिक, 02 तिब्बतो–बर्मिज एवं 04 द्रविड़यन भाषा परिवार से हैं। वर्गीकरण निम्न प्रकार है :–

1. इंडो–यूरेपियन (INDO-EUROPEAN)
   - (क) इंडो–आर्यन (INDO-ARYAN)
   - (ख) इरानियन (IRANIAN)
   - (ग) जर्मेनिक (GERMANIC)
2. द्रविड़यन् (DRAVIDYAN)
3. आष्ट्रो–एशियाटिक (AUSTRO-ASIATIC)
4. तिब्बतो–बर्मिज (TIBETO-BURMESE)
5. सेमीटो–हमीटिक (SEMITO-HAMITIC)

झारखण्ड की भाषाएँ प्रथम तीन भाषा परिवार में से है। इंडो–आर्यन भाषा परिवार में से – संस्कृत, हिन्दी, बंगला, ओड़िया, असमी, पंजाबी, मगही, भोजपुरी, मैथिली, सादरी, नागपुरी, खोरठा, पंचपरगनियाँ, कुरमाली आदि। आष्ट्रो–एशियाटिक भाषा परिवार में से – मुण्डारी, संताली, हो, खड़िया आदि। द्रविड़ भाषा परिवार में से – कुँड़ुख़ एवं मालतो है। कुँड़ुख़ एवं मालतो को उतरी द्रविड़ भाषा कहा गया है। मध्य द्रविड़ में – गोंडी, तुलु आदि। दक्षिणी द्रविड़ भाषा परिवार की मुख्य भाषाओं में से – तमिल, तेलगु, मलयालम, कन्नड़ आदि है।

इस रिर्पोट के अनुसार भारत देष में कुँड़ुख़ (उराँव) को mother tongue दर्ज करने वालों की संख्या 19,88,350 है, जिनमें से 9,93,346 पुरूष तथा 9,95,004 महिलाएँ हैं। यहाँ लिंग अनुपात में महिलाएँ अधिक हैं। साथ ही यह तथ्य प्रकाश में आया कि देश के सभी राज्यों एवं केन्द्र शासित प्रदेशों में रहकर कुँड़ुख़ भाषी कमोवेश अपनी मातृभाषा, कुँड़ुख़/उराँव दर्ज करवाये हैं। संख्या की दृष्टि से कुँड़ुख़ को मातृभाषा दर्ज करने वालों में सबसे अधिक संख्या झारखण्ड से है। उसके बाद क्रमवार छत्तीसगढ़, पश्चिम बंगाल, ओड़िसा, बिहार, असम, अंडामन–निकोबार आदि है। जनसंख्या सूचकांक के मानक संख्या के आधार पर 10,000 (दस हजार) से अधिक वाले प्रदेष की सूची में 6 (छः) राज्य एवं 01 (एक) केन्द्र षासित प्रदेष है तथा 1,50,000 (डेढ़ लाख) से अधिक संख्या वाला प्रदेश मात्र 03 (तीन) है, जिसमें झारखण्ड, छत्तीसगढ़ एवं पष्चिम बंगाल राज्य है। विवरण इस प्रकार है :–

Distribution of KURUKH / ORAON Non Scheduled language in India as per Census 2011

State	Total	Male	Female
1. Jharkhand	9,52,164	4,74,426	4,77,738
2. Chhatisgarh	5,16,778	2,56,692	260086
3. W. Bengal	1,71,909	86,428	85,481
4. Odisa	1,36,031	67,225	68,806
5. Bihar	87,995	45,208	42,787
6. Assam	73,437	36,943	36,494
7. Maharastra	8,239	4,160	4,079
8. Tripura	7,145	3,798	3347
9. UttarPradesh	4,495	2,332	2,163
10. M.P.	4132	2342	1790
11. Hm Pradesh	2,227	1275	1002
12. Nagaland	993	536	457
13. ArunachalPr.	969	561	408
14. Tamil Nadu	817	471	346
15. Utrakhand	696	404	292
16. Haryana	539	277	262
17. J&K	321	252	69
18. Karnataka	286	134	150
19. Rajasthan	251	176	75
20. Goa	213	115	98
21. Panjab	195	114	81
22. Meghalay	176	96	80
23. Gujrat	116	68	48
24. Sikkim	85	55	30
25. Andhra Pra.	66	32	34
26. kerala	56	50	06
27. Mizoram	42	20	22
28. Manipur	36	28	08

National Capital Teritory & Union Teritory

State	Total	Male	Female
1. A&N Island	15,064	7,780	7,284
2. NCT of Delhi	2,753	1,298	1,455
3. Chandigarh	39	22	17
4. Daman&Dui	21	18	03
5. Pudduchery	12	07	05
6. D&N Havel	04	03	01

Population of Tribal Language (Scheduled & Non Scheduled) in India as per Census 2011

Language	INDIA	Jharkhand	CHG.	W. Bengal	Odisa	Bihar	Assam	M.P/UP/RJ/M/ GUJ/ANDRA/K
1. Bhili	1,0413637	**	**	**	1213	1448	3038	1,03,77,045+
2. Santali(S)	73,68,192	3269897	17862	2429073	862590	458949	213139	51565(Maha.)
3. Gondi	29,84,453	**	1071400	**	56517	**	**	18,37,329+
4. Kurukh	19,88,350	9,52,164	5,16,778	1,71,909	1,36,031	87,995	73,437	15,064(A&N) 8234 (Maha.)
5. Bodo(S)	14,82,929	**	**	42739	**	**	1416125	**
6. Ho	14,21,418	9,94,302	1,408	6,055	4,11,724	1,890	**	
7. Mundari	11,28,228	9,42,108	**	29594	1,23,488	**	2468	1378(Aru.P.)
8. Munda	5,05,922	23907	23907	**	3,35830	**	71903	
9. Savara	4,09,549	**	**	24915	298655	**	5900	74605(Andr.)
10. Kharia	2,97,614	1,40,148	**	6,876	126,872	75986	8,921	4069(A&N)
11. Malto	2,34,991	151565	**	5057	1356	**	**	**
12. Kisan	2,06,100	3321	**	10,277	1,94,718	**	**	**
13. Kora	47,268	**	2104	40741	**	**	**	**
14. Korwa	28,453	2341	19212	2009	**	**	**	3693(Maha.)
15. Bhumij	27,506	11,275	**	6,977	5912	963	952	**

Person who returned the language as their mother tongue						Decadal percentage increase			
Language	1971	1981	1991	2001	2011	71-81	81-91	91-2001	2001-11
1. Santali	3786 899	4332511	5216325	6469600	7368192	14.41	20.40	24.03	13.89
2. Kurukh	1235665	1333670	1426618	1751489	1988350	3.93	6.97	22.77	13.52
3. Ho	751389	783301	949216	1042724	1421418	4.25	21.18	9.85	36.32
4. Mundari	771253	742739	861378	1061352	1128228	-3.70	15.97	23.22	6.30
5. Munda	309293	377492	413894	469357	505922	22.05	9.64	13.40	7.79
6. Kharia	191421	212605	225556	239608	297614	11.67	6.09	6.23	24.21
7. Kora	14333	23113	28200	43030	47268	61.23	22.01	52.59	9.85
8. Malto	-	100177	1081148	224926	234991	-	7.96	107.98	4.47

*Google - Census of India 2011 (Linguistic). ** Less than 1000 popoulation in state is not mentioned in this table.

झारखण्ड के परिपेक्ष्य में भाषायी जनगणना के आधार पर कई प्रश्न उठ रहे हैं। पहला – नवगठित राज्य झारखण्ड में, जिसके गठन का आधार सम्वृद्ध सांस्कृतिक धरोहर बतलाया गया, क्या अब वह सांस्कृतिक विरासत संरक्षित और सुरक्षित है? दूसरा – क्या, वह संवृद्ध सांस्कृतिक विरासत के संवर्द्धन के लिए षिक्षा नीति एवं आदिवासी कल्याण नीति द्वारा यथोचित मदद मिलेगा? इन प्रश्नों के उत्तर ढूँढ़ने से पहले झारखण्ड में अनुसूचित जनजातियों की सूची पर दृष्टि डाला जाए :–

List of Scheduled Tribes in Jharkhand

1. Asur
2. Baiga
3. Banjara
4. Bathudi
5. Bedia
6. Binjhia
7. Birhor
8. Birjia
9. Chero
10. Chick Baraik
11. Gond
12. Gorait
13. Ho
14. Karmali
15. Kharia
16. Kharwar
17. Khond
18. Kisan
19. Kora
20. Korwa
21. Lohra
22. Mahli
23. Mal Pahariya
24. Munda
25. Oraon
26. Parhaiya
27. Santhal
28. Sauria Paharia
29. Savar
30. Bhumij
31. Kol
32. Kanwar

Kanwar and Kol added in 8 June 2003 in the annexure and number of Schedule Tribe came to 32. ***WikipediA

भारतीय आदिवासी समाज के पास उसकी अपनी विशिष्ट भाषा, संस्कृति, रूढ़ी–परम्परा आदि उनकी पुस्तैनी विरासत है। क्या, वर्तमान भूमंडलीकरण के दौर में आदिवासी, अपनी पुस्तैनी धरोहर को संरक्षित एवं सुरक्षित कर पाएंगे? अगर हाँ, तो कैसे? और नहीं तो, क्यों?

झारखण्ड अलग प्रांत, आन्दोलन के दौरान आंदोलनकारी छात्र नेताओं द्वारा बार–बार यह प्रष्न उठाया जाता था कि – अगर कल के दिन झारखण्ड बनेगा तो सिस्टम वही रहेगा, जो बिहार में है। यानि मंत्री से लेकर संतरी तक और टेक्नोक्रेट से लेकर ब्यूरोक्रेट तक वही पुरानी व्यवस्था रहेगी, तो फिर यह आन्दोलन किसके लिए? पढ़ा–लिखा वर्ग तो कहीं भी नौकरी या व्यापार कर लेगा। हमारे गाँव–समाज के लोगों को क्या मिलेगा, जो इस आन्दोलन में जूझ रहे हैं। इस प्रश्न के उत्तर में वे कहते थे – आदिवासी समाज के पास अपनी भाषा है, संस्कृति है, अपनी रूढ़ी–परम्परा है। अगर आन्दोलन के माध्यम से यह धरोहर बच जाता है तो हम आन्दोलन को सफल मानेंगे। इसके लिए भाषा को बचाना होगा। भाषा बचेगी तभी संस्कृति बचेगी और भाषा तभी बचेगी जब भाषा की पढ़ाई प्राथमिक स्तर से विष्वविद्यालय स्तर तक हो और आज के भूमण्डलीकरण के दौर में अपनी आदिवासी भाषा को बचाने एवं निखारने के लिए जो भी माध्यम की जरूरत पड़ेगी, उन बातों को आगे लाना पड़ेगा।

वर्ष 2011 की जनगनणा रिपोर्ट में मातृभाषा के आधार पर जिन अनुसूचित एवं गैर अनुसूचित भाषाओं की गणना की गई है वह आने वाले समय में आदिवासियों के लिए घोर चिंता का विषय है। झारखण्ड की 32 अनुसूचित जनजाति में से मात्र 10–11 भाषाओं को (संताली को छोड़कर) गैर अनुसूचित भाषाओं की सूची में दर्ज किया गया है। बाकी 21 आदिवासियों की भाषा का क्या हुआ? क्या, आने वाले समय में उन भाषाओं के विकास के लिए शिक्षा नीति में स्थान मिलेगा? यदि नहीं, तो वे अपनी भाषा को कैसे बचाएंगे, क्या? दूसरी ओर जिन आदिवासियों ने अपनी मातृभाषा के रूप में सादरी, नागपुरिया, पंचपरगनियाँ आदि दर्ज कराया है वह संवृद्ध हिन्दी भाषा को अलंकृत कर रहा है। ऐसे में झारखण्डी संस्कृति की पहचान कहाँ? दुनिया की कितनी भाषाएँ हैं इसका ठीक–ठीक उत्तर देना संभव नहीं है। सूचना प्राद्यौगिकी का आकलन है कि दुनियाँ में लगभग 16000 भाषाएँ बोली जाती थीं जो वर्तमान में लगभग 6809 रह गयी है। इनमें से 90 फीसदी भाषाओं को बोलने वालों की संख्या 01 लाख से भी कम

है। लगभग 200 से 150 भाषाएँ ऐसी हैं जिनको 10 लाख से अधिक लोग बोलते हैं। लगभग 357 भाषाएं ऐसी हैं जिनको मात्र 50 लोग ही बोलते हैं। इतना ही नहीं 46 भाषाएं ऐसी भी हैं जिनको बोलने वालों की संख्या मात्र 01 है। दुर्भाग्यवश संचार के माध्यमों में वृद्धि के साथ ही कई ऐसी छोटी भाषाएं हैं जो लुप्तप्राय हैं। इन भाषाओं के लुप्त होने के साथ ही इन्हें बोलने वालों की संस्कृति भी समाप्त हो जाएगी।

भाषा, विचारों को व्यक्त करने का एक प्रमुख साधन है। भाषा, मुख से उच्चारित होने वाले शब्दों और वाक्यों आदि का वह समूह है, जिनके द्वारा मन की बात बतलाई जाती है। भाषा की सहायता से ही किसी समाज विशेष या देश के लोग अपने मनोगत भाव अथवा विचार एक–दूसरे पर प्रकट करते हैं। भाषा विज्ञान के जानकारों ने यूं तो भाषा के विभिन्न वर्ग स्थापित करके उनमें से प्रत्येक की अलग–अलग शाखाएं बनाई हैं। यथा, हमारी हिन्दी भाषा, भाषा विज्ञान की दृष्टि से भारतीय आर्य शाखा की एक भाषा है। ब्रजभाषा, अवधी, बुंदेलखंडी आदि इसकी उप भाषाएं हैं। पास–पास बोली जाने वाली अनेक उप भाषाओं में बहुत कुछ साम्य होता है और उसी साम्य के आधार पर उनके वर्ग या कुल स्थापित किए जाते हैं। मानव समाज के साथ ही भाषा का भी बराबर विकास होता आया है। इसी विकास के कारण भाषाओं में सदा परिवर्तन होता रहता है। भाषा के बिना मनुष्य अपूर्ण है और अपने इतिहास और परंपरा से विछिन्न है। भाषा और लिपि भाव व्यक्तिकरण के दो अभिन्न पहलू हैं। एक भाषा कई लिपियों में लिखी जा सकती है जबकि हिन्दी, मराठी, संस्कृत, नेपाली आदि सभी देवनागरी में लिखी जाती हैं। भाषा में ही हमारे भाव, राज्य, वर्ग, जातीयता और प्रांतीयता झलकती है। इस झलक का संबंध व्यक्ति की मानवीय संवेदना और मानसिकता से भी होता है।

मनुष्य को सभ्य और पूर्ण बनाने के लिए शिक्षा जरूरी है और सभी प्रकार की शिक्षा का माध्यम भाषा ही है। साहित्य, विज्ञान, अर्थषास्त्र आदि सभी क्षेत्रों में प्रारंभिक से लेकर उच्चतर शिक्षा तक हर स्तर पर भाषा का महत्व स्पष्ट है। जीवन के सभी क्षेत्रों में किताबी शिक्षा हो या व्यवहारिक शिक्षा, यह भाषा के द्वारा ही प्राप्त की जा सकती है। विश्व में विज्ञान से लेकर भाषा विज्ञान तक सभी क्षेत्रों में नए–नए शोध होते रहते हैं। इनमें अध्ययन व शोध लेखन के लिए नए–नए शब्द रचे जाते हैं। इन शब्दों से संचय से भाषा के द्वारा सामाजिक– वैज्ञानिक विकास की अभिव्यक्ति होती है। भाषा के बिना लिखित साहित्य का अस्तित्व ही संभव नही है। वेद, पुराण, उपनिषद् से लेकर तुलसीदास आदि का साहित्य, भाषा के कारण इतने सालों तक सुरक्षित रहकर आज तक भी हमें अध्ययन के लिए प्रेरित करता है। साहित्यकार ऐसी भाषा को आधार बनाते हैं, जो उनके पाठकों व श्रोताओं की संवेदनाओं के साथ एकाकार करने में समर्थ हों।

हमें अपने बच्चों को अपनी मातृभाषा के महत्व को समझाना होगा। हमें अपनी परंपरा का वास्तविक चित्र उन्हें दिखाना होगा। माता के अलावा संस्कार का तीसरा स्त्रोत बच्चे का वह प्राकृतिक व सामाजिक परिवेश है जिसमें वह जन्म लेता है और पलता–बढ़ता है। यह परिवेश उसके आहार–व्यवहार, शरीर के रंग–रूप के साथ ही आदतें भी बनाता है। सामाजिक परिवेश के अंतर्गत परिवार, मोहल्ला, गांव और विद्यालय के साथी, सहपाठी, मित्र, पड़ोसी व शिक्षक आते हैं। पवित्र भावों और आस्था का सूत्र ही अपने पूर्वजों के प्रति कृतज्ञता और पूज्य भाव के लिए प्रेरित करता है। यही सूत्र सामाजिक आचरण का नियम कहलाता है। गोस्वामी तुलसीदास कहते हैं –

वषीकरण एक मंत्र है, तज दे वचन कठोर।
तुलसी मीठे वचन ते, सुख उपजत चहुंओर।

गोस्वामी तुलसीदास की ये पंक्तियां भाषा के महत्व को समझाने के लिए काफी हैं। भाषा से संस्कार जुड़े होते हैं। वर्तमान पीढ़ी अपनी भाषा से दूर होने के साथ संस्कारों से भी दूरी बना रही है, जिससे पाश्चात्य संस्कृति का बोलबाला बढ़ रहा है। हम जिस भाषा को महत्व देते हैं उसी भाषा की संस्कृति सीखते–समझते हैं। इसके लिए बच्चों को अपनी भाषा से जोड़े रखना बेहद जरूरी है। हमारी भाषा ही हमें पीढ़ियों से जोड़ती है। हमारी राष्ट्र भाषा हिन्दी दुनिया में दूसरी सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा है। फिर भी आधुनिकता की आंधी में युवा पीढ़ी हिन्दी से ही दूर होती जा रही है। हालांकि सोशल मीडिया पर बढ़ती हिन्दी सक्रियता ने लोगों को अपनी भाषा की ओर से फिर से मोड़ने और जोड़ने का काम किया है। इससे जहां हिन्दी भाषा के प्रयोग का चलन बढ़ा है वहीं विश्व पटल पर भी देश के प्रतिनिधियों ने देश की भाषा को स्थापित करने में पूरा योगदान दिया है।

झारखण्ड के परिपेक्ष्य में मातृभाषाओं को जीवन के विकास का सहचरी कहने वाले प्रख्यात झारखंड आंदोलनकारी शीर्ष नेतृत्व युवा छात्र नेता आजसू जैसे

संगठन का संस्थापक सह अध्यक्ष विनोद कुमार भगत ने – भाषा को अस्तित्व का स्वरूप कहा है और झारखंड आंदोलन में भाषा को झारखंड का विकास नहीं होने का कारण के रूप में चिन्हित किया। परिणाम स्वरूप भाषा का महत्व झारखंड राज्य के गठन के बाद से बढ़ा है, और अब जनजातीय तथा क्षेत्रिय भाषाओं का विकास की ओर बढ़ते कदम से जनजातीय सामाजिक मूल्यों की रक्षा तथा संस्कृतिक परंपराओं को जीवंत बनाने की ओर चला जा रहा है। श्री भगत जनजातियों के विकास में इनकी भाषा और लिपि को महत्वपूर्ण बनाने पर जोर दे रहे हैं। अभी भी इनकी महत्वपूर्ण भूमिका है। भाषाओं के विकास में इनके चिंतन धारा से झारखंड गर्वान्वित महसूस करती है। पद्मश्री डॉ. रामदयाल मुण्डा, अमेरिका के मिनिसोटा विश्वविद्यालय से राँची आकर झारखण्ड अलग प्रांत आन्दोलन को दिशा प्रदान किये। इसके लिए वे – "मातृभाषा में शिक्षा की परिकल्पना को आधार बनाये। उन्होंने, पांच आदिवासी भाषा तथा चार क्षेत्रिय भाषा को साथ लेकर जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा विभाग का गठन करवाये और उसका संचालन किये।" वे कहा करते थे कि जब हमारे लोग अपने बारे में अपने तरह से समझेंगे तो अपने बारे में बोलना सीखेंगे। और जब बोलना सीखेंगे तो राज्य, देष

(बिहार सरकार, शिक्षा विभाग ने 13 अगस्त 1953 को जनजातीय क्षेत्रों में उनके मातृभाषा के माध्यम से पढ़ाई कराने का निर्णय लिया। पुनः कोठारी कमिशन के रिपोर्ट के बाद 22 जनवरी 1978 को मातृभाषा के रूप में संताली, उराँव, हो एवं मुण्डारी भाषा को माध्यमिक स्तर तक पढ़ाई हेतु अधिसूचना जारी किया गया।)

शिक्षा विभाग संकल्प सं०-ई/१ 7-0 143/78 शि० 84, दिनांक 22-1-78।

विषय–10+2+3 शिक्षा संरचना तथा उसका कार्यान्वयन।

पढ़ा गया–शिक्षा विभाग संकल्प संख्या 2844, दिनांक 23-12-1976, राज्य सरकार द्वारा राष्ट्रीय शिक्षा आयोग की अनुशंसा एवं राष्ट्रीय शिक्षा नीति के प्रावधान के आलोक में प्रथम डिग्री स्तर से नीचे की शिक्षा का स्वरूप निम्न प्रकार रखने का निर्णय लिया गया है–

2. कोठारी आयोग, एन० सी० ई० आर० टी० तथा ईश्वर भाई जे० पटेल समिति की अनुशंसा को ध्यान में रखते हुए प्रारंभिक विद्यालयों के पाठ्यक्रम में निम्नांकित विषयों को रखा गया है–

(1) मातृभाषा– वर्ग 1 से मातृभाषा के रूप में भारत के संविधान की अनुसूची 8 में सम्मिलित सभी आधुनिक भारतीय भाषाओं के अतिरिक्त मैथिली, संथाली, उराँव, हो, मुंडारी तथा एंगलो इण्डियन विद्यार्थियों के लिए अंग्रेजी को भी मान्यता होगी।

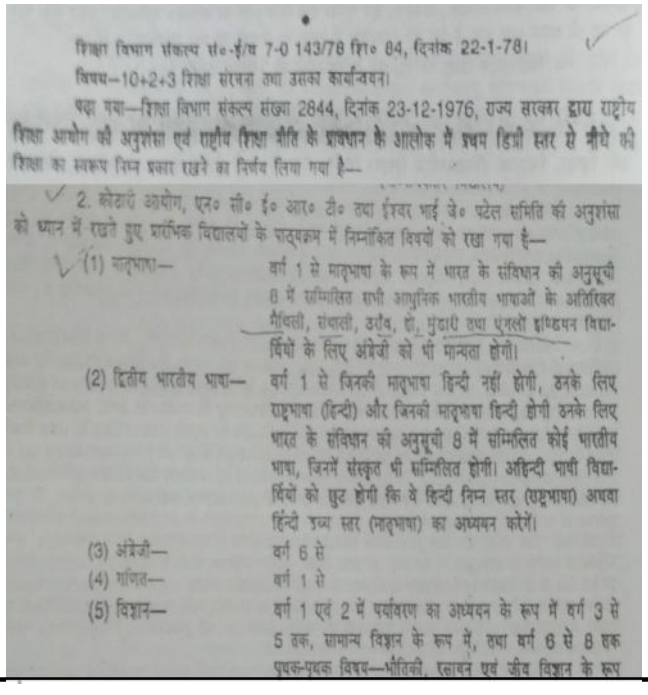

(2) द्वितीय भारतीय भाषा– वर्ग 1 से जिनकी मातृभाषा हिन्दी नहीं होगी, उनके लिए राष्ट्रभाषा (हिन्दी) और जिनकी मातृभाषा हिन्दी होगी उनके लिए भारत के संविधान की अनुसूची 8 में सम्मिलित कोई भारतीय भाषा, जिनमें संस्कृत भी सम्मिलित होगी। अहिन्दी भाषी विद्यार्थियों को छुट होगी कि वे हिन्दी निम्न स्तर (राष्ट्रभाषा) अथवा हिंन्दी उच्च स्तर (मातृभाषा) का अध्ययन करेंगें।

(3) अंग्रेजी– वर्ग 6 से

(4) गणित– वर्ग 1 से

(5) विज्ञान– वर्ग 1 एवं 2 में पर्यावरण का अध्ययन के रूप में वर्ग 3 से 5 तक, सामान्य विज्ञान के रूप में, तथा वर्ग 6 से 8 तक पृथक-पृथक विषय–भौतिकी, रसायन एवं जीव विज्ञान के रूप

Government of Bihar, Education Department Resolution No. 645 E. R. of Ranchi, the 13th August, 1953.

The State Government have recently examined fully and afresh their policy with regard to the medium of instruction in schools and inspite of the sweeping criticisms that have been sometimes made by certain sections, they have not found the policy hitherto followed either lacking in generosity towards the linguistic minorities or departing from the general principle adopted on this matter by the Government of India.

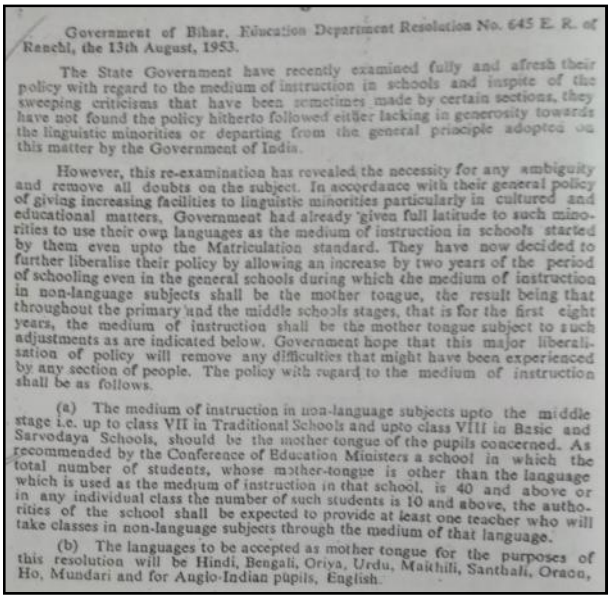

However, this re-examination has revealed the necessity for any ambiguity and remove all doubts on the subject. In accordance with their general policy of giving increasing facilities to linguistic minorities particularly in cultured and educational matters, Government had already given full latitude to such minorities to use their own languages as the medium of instruction in schools started by them even upto the Matriculation standard. They have now decided to further liberalise their policy by allowing an increase by two years of the period of schooling even in the general schools during which the medium of instruction in non-language subjects shall be the mother tongue, the result being that throughout the primary and the middle schools stages, that is for the first eight years, the medium of instruction shall be the mother tongue subject to such adjustments as are indicated below. Government hope that this major liberalisation of policy will remove any difficulties that might have been experienced by any section of people. The policy with regard to the medium of instruction shall be as follows.

(a) The medium of instruction in non-language subjects upto the middle stage i.e. up to class VII in Traditional Schools and upto class VIII in Basic and Sarvodaya Schools, should be the mother tongue of the pupils concerned. As recommended by the Conference of Education Ministers a school in which the total number of students, whose mother-tongue is other than the language which is used as the medium of instruction in that school, is 40 and above or in any individual class the number of such students is 10 and above, the authorities of the school shall be expected to provide at least one teacher who will take classes in non-language subjects through the medium of that language.

(b) The languages to be accepted as mother tongue for the purposes of this resolution will be Hindi, Bengali, Oriya, Urdu, Maithili, Santhali, Oraon, Ho, Mundari and for Anglo-Indian pupils, English.

तथा समाज का प्रतिनिधित्व करेंगे। झारखण्ड आन्दोलन के दौरान भाषाविद डॉ. फ्रांसिस एक्का का कहना था कि – आदिवासी भाषाओं के विकास के लिए नई लिपि की आवश्यकता है पर नई लिपि अति सुन्दर हो या उच्च तकनीति संधारित हो, इससे अधिक जरूरी है कि वह सामाजिक और सांस्कृतिक आधार वाली हो। लिपि वैसी हो जिसमें वर्तमान भूमण्डलीकरण तथा वैश्विक बाजार या बड़े समूह के दबाव से (आदिवासी समाज के खिलाफ उत्पन्न revers force से) मुकाबला कर सकने की क्षमता हो। इन तमाम बातों को ध्यान देते हुए उक्त भाषाविद् द्वय ने झारखण्ड में भाषा एवं लिपि विकास पर तथा मातृभाषा में प्राथमिक शिक्षा पर मार्गदर्शन किया था।

– ग्राम : सैन्दा, थाना : सिसई, जिला : गुमला।

प्रेणार्थक विचार :– मुड़मा, राँची में "कुँड़ुख़ भाषा, शिक्षा एवं धुमकुड़िया" विषयक कार्यशाला में दिनांक 13 मार्च 2022 को कार्मिक, प्रशासनिक सुधार एवं राजभाषा विभाग, झारखण्ड की प्रधान सचिव श्रीमती वंदना दादेल ने कहा – "आदिवासियों को देश की मुख्य धारा से जुड़ने के साथ अपने सांस्कृतिक विरासत को बचाने के उपाय पर भी कार्य करना होगा। सरकार द्वारा "धुमकुड़िया" निर्माण का कार्य कराया जा रहा है, पर धुमकुड़िया की आत्मा को जगाने का कार्य तो समाज के लोगों को ही करना होगा।"

– कार्यशाला संयोजन समिति, मुड़मा

5. कुँडुख़ कत्थ तोलोंग सिकि उल्ला ती कुँडुख़ कत्थ तोलोंग सिकि हपता जतरा

वर्ष – 2010

प्रथम कुँडुख़ तोलोङ सिकि उल्ला (दिवस), 20 फरवरी 2010 के अवसर पर सत्य भारती में tolongsiki.com (तोलोङ सिकि डॉट कॉम) नामक वेवसाइट, 20 फरवरी 2010 को लोकार्पण हुआ। इस अवसर पर ऑग्जीलरी बिशप श्री विनय कण्डुलना, डॉ0 लक्ष्मण उराँव, डॉ0 नारायण भगत, ई0 अजित मनोहर खलखो, फा0 अगस्तिन केरकेट्टा, डॉ0 नारायण उराँव, श्री बंधन तिग्गा, श्री अशोक बखला, श्री अजित मनोहर खलखो, श्री जेवियर सोरेंग, श्री प्लासिदियुस किड़ो, श्री सिरिल हंस, श्रीमती सरस्वती गगराई, श्री गणेश मुर्मू, श्री विनोद भगत, श्री प्रवीण उराँव, डॉ0 श्रीमती शान्ति खलखो, डॉ0 देवनिस खेस तथा रिम्स, राँची के छात्र–छात्राएँ उपस्थिति थे। यह वेबसाइट, श्री किसलय जी के द्वारा तैयार हुआ है, जिसमें तोलोंग सिकि संबंधी अद्यतन जानकारी उपलब्ध होगी।

इस अवसर पर श्री विनोद कुमार भगत ने कहा – ''झारखण्ड अलग प्रांत आंदोलन में भाषा और संस्कृति की रक्षा और विकास एक मुद्दा हुआ करता था, पर इसे कार्यरूप दिये जाने में वर्षों समय लगा। वर्तमान में अगर संस्कृति बचानी है तो उस समाज की भाषा को बचाना आवश्यक है और भाषा को बचाने के लिए घर–परिवार में बोलते रहने के साथ उस भाषा में लिखना–पढ़ना भी पड़ेगा। अर्थात उस भाषा को वर्तमान शिक्षा पद्धति में शामिल करना भी आवश्यक है।''

हिन्दुस्तान 12

रांची, रविवार, 21 फरवरी, 2010

तोलोंग सिकि की वेबसाइट का लोकार्पण

रांची। कुडुख भाषा की लिपि तोलोंग सिकि की वेबसाइट शनिवार को जारी की गई। इसका लोकार्पण झारखंड सरकार द्वारा तोलोंग सिकि/लिपि के पठन–पाठन को मान्यता देने की पहली वर्षगांठ पर किया गया। इस अवसर पर सत्यभारती सभागार में उपस्थित बिशप डॉ निर्मल मिंज, धर्मगुरु बंधन तिग्गा, बिशप विनय कंडुलना, डॉ नारायण उरांव, अशोक बाखला, अजीत मनोहर खालखो, जेवियर सोरेंग, डॉ शांति खालखो, जीतू उरांव, प्लासिदियुस किडो, सिरिल हंस, सरस्वती गागराई, गणेश मुरमू, विनोद भगत, प्रवीण उरांव व अन्य ने अपनी भाषा और संस्कृति के महत्व को रेखांकित और इसकी रक्षा का संकल्प लिया। डब्ल्यूडब्ल्यूडब्ल्यू डॉट तोलोंग डॉट सिकि पर लॉगइन करने पर फिलहाल हिंदी और अंग्रेजी में जानकारी मिलेगी।

वर्ष – 2011

तोलोङ सिकि कुँडुख़ भाषा दिवस, 20 फरवरी 2011 को झारखण्ड जनजातीय कल्याण शोध संस्थान, राँची के सभागार में, विनोबा भावे विश्वविद्यालय, हजारीबाग के **कुलपति डॉ0 रविन्द्र नाथ भगत,** पूर्व कुलपति डॉ0 विक्टर तिग्गा एवं महामहिम राज्यपाल, झारखण्ड के तत्कालीन सलाहकार डॉ0 प्रकाष चन्द्र उराँव, डॉ0 निर्मल मिंज, सिसटर जेम्मा, श्री पियुष अमुत बेक, डॉ0 श्रीमती शान्ति खलखो, डॉ0 नारायण उराँव सैन्दा आदि विशिष्ट लोगों की उपस्थिति में सम्पन्न हुआ।

इस अवसर पर डॉ. विक्टर तिग्गा ने कहा – अपनी भाषा और संस्कृति किसी जाति विषेष की पहचान होती है। हमारे आदिवासी समाज में बहुत सी भाषाएँ बोली जातीं है, पर कुछ भाषाओं की लिपि अभी तक विकसित नहीं हो पायी है। यही कारण है कि बहुत सी भाषाएँ लुप्त होने के कगार पर हैं। किसी भाषा की लिपि उस भाषा के लिए कवच की तरह है जो उसे स्थायित्व प्रदान करता है, उसे लुप्त होने से बचाती है।

डॉ.नारायण उराँव एवं उनके सहयोगियों द्वारा विकसित कुँडुख़ भाषा की लिपि तोलोंग सिकि इस दिशा में एक सराहनीय कदम है। इसके लिए वे सभी बधाई के पात्र हैं।

4 दैनिक जागरण रांची, 21 फरवरी 2011

समाज की पहचान भाषा से

रांची : अखिल भारतीय तोलोंग सिकि प्रचारिणी सभा के तत्वावधान में रविवार को तोलोंग सिकि दिवस जनजातीय कल्याण शोध संस्थान के सभागार मनाया गया। मुख्य अतिथि विनोबा भावे विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ.रवीन्द्रनाथ भगत ने कहा, समाज की पहचान भाषा से होती है और संस्कृति की वाहिक भाषा ही होती है। सिद्धू कान्हू विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति विक्टर तिग्गा ने इस लिपि को विश्वविद्यालय स्तर पर लाने पर बल दिया। पूर्व सांसद दुखा भगत ने कहा कि जिस भाषा को पूर्व में बोलते थे, अब उसे अपनी लिपि में भी लिखना होगा। मौके पर बिशप डॉ. निर्मल मिंज, सिस्टर जेम्मा, पीयूष अमृत बेक, अब्राहम व डॉ. शांति खलखो सहित कई लोग उपस्थित थे।

बैठक रविवार को चर्च रोड के विक्रांत चौक स्थित प्रधान कार्यालय में हुई। परिषद के हीरालाल तिवारी ने निगम के अधिकारियों से सफाईकर्मियों को बैज व नेमप्लेट उपलब्ध कराने की मांग की।

निशुल्क दंत चिकित्सा शिविर

रांची : रक्तदान सह निशुल्क दंत चिकित्सा शिविर कम्पलीट हेल्थ सर्विसेस ने रविवार को कार्तिक उरांव आदिवासी छात्रावास करम टोली में लगाया। छात्रों ने अपने दांतों की जांच करवाई। मौके पर डॉ. राजेश पटेल, ज्योति प्रकाश, प्रकाश रंजन, विवेक कुमार आदि थे।

मुख्यमंत्री को दी बधाई

वर्ष – 2012

तोलोङ सिकि दिवस, 20 फरवरी 2012 को कार्तिक उराँव बाल विकास विद्यालय, सिसई, गुमला एवं अद्दी कुँड़ुख़ चाला धुमकुड़िया पडहा अखड़ा (अद्दी अखड़ा) के संयोजन में झारखण्ड राज्य समन्वय समिति के सदस्य डॉ0 देवशरण भगत, डॉ0 निर्मल मिंज, डॉ0 करमा उराँव, प्रो0 बेनार्ड मिंज, फा0 अगस्तिन केरकेट्टा, पा0 सिरिल हंस, डॉ0 नारायण भगत, प्रो0 सोमनाथ उराँव, डॉ0 नारायण उराँव, श्री मंगरा मुण्डा, श्री लोयो उराँव आदि के उपस्थिति में मनाया गया। समारोह में भाग लेने हेतु कार्तिक उराँव आदिवासी वाल विकास विद्यालय, कार्तिक नगर, सिसई, संत जेवियर उच्च विद्यालय रोशनपुर, आर.सी.मध्य विद्यालय, बसिया रोड, सिसई तथा सैन्दा, सियांग, कोड़ेदाग, पंडरानी, बघनी, करकरी, जलका, शिवनाथपुर, अताकोरा, मंगलो आदि गांव से ग्रामीण अपनी परंपारिक वेशभूषा में पधारे हुए थे। समारोह में कुँड़ुख़ भाषा एवं लिपि के विकास का संकल्प लिया गया।

इस अवसर पर डॉ0 देवशरण भगत ने कहा – हमलोग छात्र जीवन में भाषा–संस्कृति संरक्षण आदि पर चर्चा करते रहते थे और झारखण्ड अलग प्रांत आन्दोलन में भाषा–संस्कृति बचाव की बात भी उठाने लगे। छात्र आन्दोलन के साथ जुड़े रहने के चलते डॉ0 नारायण ने भी प्रण लिया कि आदिवासी जन आन्दोलन की सेवा में नौकरी के साथ साहित्य के क्षेत्र में सामाजिक योगदान देंगे और उन्होंने वैसा ही किया। मेडिकल की पढ़ाई एवं सेवा के साथ वे आदिवासी भाषा की लिपि के रूप में तोलोंग सिकि को स्थापित किया और छात्र आन्दोलन की अवधारणाओं को मूर्त रूप दिया, यह उनका अमूल्य योगदान है।

न्यूज़ इनबॉक्स

कैलगा तोलंगसीकी की पांडुलिपि का विमोचन

वर्ष – 2013

तोलोङ सिकि दिवस, 20 फरवरी 2013 को झखरा कुम्मबा, लोहरदगा में श्री विनोद भगत के नेतृत्व में तथा पूर्व विधायक श्री सुकदेव भगत, विधायक श्री बन्धु तिर्की, डॉ0 नारायण उराँव, डॉ0 फा0 जे0 बखला (डॉ0 एतवा उराँव), फा0 अगुस्तिन केरकेट्टा तथा अद्दी कुँड़ुख़ चाला धुमकुड़िया पडहा अखड़ा (अद्दी अखड़ा) के गनमान्य व्यक्ति तथा राजी पड़हा सरना प्रार्थना सभा के माननीय सदस्यों की उपस्थिति में मनाया गया।

इस अवसर पर डॉ० फा० जे० बखला उर्फ एतवा उराँव ने कहा – अक्कुन ता बेड़ा नू कुँड़ुख़ ख़द्दारिन हिन्दी अरा अंगरेजी गने कुँड़ुख़ कत्था हूँ पढ़ना मनो। अन्ने गा कुँड़ुख़ कत्था एड़पा–पल्ली अरा पद्दा ख़ेप्पा नू रअ़ई मुन्दा अदिन शिक्षा अरा रोजगार ही माध्यम हूँ कमना मनो। इदी संग्गे ओण्टा राष्ट्रीय भाषा अरा ओण्टा अंतर्राष्ट्रीय भाषा नु पोकता मनना मनो। एःन इजराईल देश पढ़आ केरका रहचकन। असता आःलर दुनियाँ नू एकअम गुसन नुकरी ननोर पँहेस ख़द्दर गही गर्मी छुटी बेड़ा नू होरमर तमहँय राःजी किर्रनर अरा ख़द्दारिन तमहँय भाषा सिखाबअ़नर। ई घोख एंगहय जिया नू उक्कया केरा, ख़ने एःन लूरडिप्पा नू कुँड़ुख़–इंगलिस मिडियम स्कूल कुल्लकन दरा अक्कु इसता ख़द्दर कुँड़ुख़ कत्था गही परीक्षा तोलोंग सिकि नुम टूड़ा लगनर।

वर्ष – 2014

तोलोङ सिकि उल्ला (दिवस), 20 फरवरी 2014 को ललित उराँव नगर भवन, गुमला में पूर्व विधायक श्री बेर्नाड मिंज, श्री विनोद भगत एवं श्रीमती बॉबी भगत के संयोजन में मुख्य अतिथि पूर्व कुलपति वि0 भा0 वि0 हजारीबाग, डॉ0 रविन्द्र नाथ भगत एवं विशिष्ट अतिथि विशप डॉ० निर्मल मिंज के संरक्षण में मनाया गया। इस अवसर पर बायें से दायें डॉ0 शान्ति खलखो, डॉ० नारायण उराँव 'सैन्दा', श्री बेर्नाड मिंज, श्रीमती बॉबी भगत, विशप डॉ० निर्मल मिंज, श्री ए०एम०खलखो, फा० अगुस्तिन केरकेट्टा के अतिरिक्त फा० अलबिनुस मिंज, डॉ० नारायण भगत, श्री जिता उराँव, श्री बहुरा उराँव, श्री भइया रामन कुजूर, एडवोकेट अघनु उराँव, श्री गजेन्दर उराँव 'कोटवार' तथा गुमला जिला के कई गनमान्य व्यक्तियों की उपस्थिति में मनाया गया। समारोह में एराउज, गुमला, कुँड़ुख़ कत्थ खोंड़हा, लूरएड़पा भागीटोली, डुमरी, गुमला, अद्दी कुँड़ुख़ चाःला धुमकुड़िया पड़हा अखड़ा, सैन्दा, सिसई, बालिका छात्रावास, गुमला, सिनगी दई महिला कॉलेज छात्रावास, गुमला, कार्तिक उराँव कॉलेज छात्रावास, गुमला, सरना कॉलेज छात्रावास, गुमला, उराँव छात्रावास, गुमला आदि के छात्र–छात्रों ने कार्यक्रम को सफल बनाया।

वर्ष – 2015

तोलोङ सिकि उल्ला (दिवस), 20 फरवरी 2015 को कार्तिक उराँव आदिवासी कुँड़ुख़ उच्च विद्यालय, मंगलो, सिसई, गुमला एवं अद्दी कुँड़ुख़ चाला धुमकुड़िया पडहा अखड़ा (अद्दी अखड़ा) द्वारा आयोजित कार्यक्रम में श्री दिनेश उराँव, अध्यक्ष, झारखण्ड विधान सभा एवं पूर्व शिक्षा मंत्री, झारखण्ड सरकार श्रीमती गीताश्री उराँव, बिशप डॉ0 निर्मल मिंज, डॉ0 नारायण उराँव 'सैन्दा', फा0 अगुस्तिन केरकेट्टा, फा0 प्रेमचन्द तिर्की, फा0 प्रफुल्ल तिग्गा, फा0 देवनीस खेस्स, श्री फिलमोन टोप्पो, श्री जिता उराँव, श्री मंगरा उराँव, श्री गजेन्दर उराँव 'कोटवार' तथा गुमला जिला के कई गनमान्य व्यक्तियों तथा षिक्षकों की उपस्थिति में मनाया गया। समारोह में कुँड़ुख़ कत्थ खोंड़हा, लूरएड़पा भागीटोली, डुमरी, गुमला, बीर बुधू भगत कुँड़ुख़ लूरकुड़िया, सैन्दा आदि के छात्रों ने भाग लिया। इस अवसर पर माननीय विधान सभा अध्यक्ष, श्री दिनेश उराँव द्वारा स्कूल के बच्चों के समक्ष दो वचन दिया गया – 1. इस विद्यालय के टॉपर को वे 11000/– रूपये देंगे। 2. वर्ष 2016 सत्र से इस विद्यालय के बच्चे कुँड़ुख़ भाषा की परीक्षा, कुँड़ुख़ भाषा की लिपि, तोलोंग सिकि में लिखेंगे।

वर्ष – 2016

दिनांक 20 फरवरी 2016 को तोलोङ सिकि उल्ला (दिवस), राजकीयकृत मध्य विद्यालय छारदा, सिसई, गुमला के प्रांगन में मनाया गया। यह कार्यक्रम, अद्दी कुँड़ुख़ चाला धुमकुड़िया पड़हा अखड़ा (स्वंय सेवी संस्था), कार्तिक उराँव आदिवासी कुँड़ुख़ उच्च विद्यालय, मंगलो एवं राजकीयकृत कार्तिक उच्च विद्यालय, छारदा के जनसहयोग से आयोजित किया गया था। इस दिवस में बतौर मुख्य अतिथि षिक्षाविद एवं कुँड़ुख़ भाषा के विद्वान विशप डॉ0 निर्मल मिंज उपस्थित थे। विशप मिंज ने अपने संबोधन में कहा –

(1) अक्कु गूटी कुँड़ुख़ कत्था ख़ेबदा नु मेंदेरआ लगिया एकला, मुन्दा अक्कु ईद ख़न्न गे एथेरओ। नेड़्डा 12.02.2016 गे झारखण्ड सरकार तरती झारखण्ड अधिविद्य परिषद, राँची, मैट्रिक परीक्षा 2016 ती कुँड़ुख़ विषय ही परीक्षा तोलोङ सिकि (लिपि) नु लिखआ गे अनुमति चिच्चा। अक्कु नाम उज्जना–ओक्कना नु कुँड़ुख़ कत्थन कछनखरआ अरा तंगआ चिनहाँ तुरू टूःड़ा ओङगोत। बरा नाम अक्कु कुँड़ुख़ कत्थन टूःड़ोत–बचओत दरा एःदना जोःगे कमओत।

(2) एका बाःरी नमन देवनागरी लिपि ती तंगआ अयंग कत्थन टूड़ना मनो, आ बाःरी नाम अदिन कुँड़ुख़ घोख बेसे टूःड़ोत, तबेम नमहँय उबार रअ्ई।

मुख्य वक्ता के रूप में तोलोङ सिकि (लिपि) के संस्थापक डॉ0 नारायण उराँव 'सैन्दा', फा0 अगुस्तिन केरकेट्टा, श्री फिलमोन टोप्पो, मांडर के पूर्व विधायक श्री विश्वनाथ भगत, श्री मंगरा उराँव, पड़हा कोटवार श्री गजेन्दर उराँव तथा जमषेदपुर से आये मेहमान श्रीमती बिलचो लकड़ा आदि ने लिपि की आवश्यकता पर प्रकाश डाला। इस अवसर पर जनसाधारण को सूचना दी गई कि – दिनांक 12.02.2016 को झारखण्ड अधिविद्य परिषद, राँची द्वारा कुँड़ुख़ भाषा पत्र की परीक्षा तोलोंग सिकि लिपि में लिखे जाने की अनुमति मिली है।

वर्ष – 2017

दिनांक 12.02.2017 दिन रविवार को, कुँड़ुख़ भाषा तोलोङ सिकि सप्ताह समारोह 2017 (12 फरवरी से 20 फरवरी तक) का पहला दिन, केन्द्रीय सरना मिलन स्थल, सिसई थाना के सामने, थाना सिसई, जिला गुमला में मनाया गया। समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में झारखण्ड विधान सभा के अध्यक्ष, डॉ0 दिनेश उराँव उपस्थित थे। इस भाषा–लिपि सप्ताह में सिसई क्षेत्र में कुँड़ुख़ भाषा की पढ़ाई कर रहे विद्यार्थी एवं छात्रावास के छात्र–छात्राएँ तथा कई गाँव के चल रहे धुमकुड़िया के बच्चे शामिल थे। इस भाषा सप्ताह के आयोजन में अद्दी अखड़ा एवं विकास परिषद, संस्था ने मुख्य भूमिका निभायी।

प्रभात खबर

रांची, सोमवार 13.02.2017

अपनी भाषा में बातचीत से अपनत्व झलकता है

सिसई. कुड़ुख भाषा सप्ताह समारोह के तहत रविवार को केंद्रीय सरना पर कार्यक्रम का आयोजन हुआ. उदघाटन मुख्य अतिथि स्पीकर दिनेश उरांव ने दीप जलाकर किया. स्पीकर ने कहा कि तोलंग सिक्की लिपि डॉ नारायण उरांव द्वारा तैयार किया गया है. जिसको वर्ष 2009 में सरकार द्वारा विद्यालय में पढ़ाई की स्वीकृति मिली. आज सभी विद्यालयों में पढ़ाई की व्यवस्था है. उन्होंने कहा कि जब हम कहीं बाहर जाते हैं और अपने लोग अपने भाषा में बातचीत करते हैं, तो अपनत्व झलकता है.कुड़ुख भाषी समाज को भाषा को बढ़ावा देने के लिए अपने लोगों से अपनी भाषा में बात करने की जरूरत है. मौके पर कप्तान लोहरा उरांव, नारायण उरांव, चंद्रमनी देवी, जीता उरांव, सरना उरांव, रोपना उरांव, सुरेंद्र उरांव, बैजनाथ उरांव, लोहरमैन उरांव, गजेंद्र उरांव सहित कई लोग मौजूद थे.

वर्ष – 2018

दिनांक 12 फरवरी 2018 दिन सोमवार को *कुँड़ुख़ भाषा तोलोङ सिकि सप्ताह* के प्रथम दिन सिसई, गुमला के छात्र, शिक्षक एवं अभिभावक द्वारा परम्पारिक तरीके से भाषा सप्ताह समारोह मनाया गया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि पूर्व शिक्षा मंत्री श्रीमती गीताश्री उराँव एवं विशिष्ट अतिथि डॉ. नारायण भगत, एवं तोलोङ सिकि के जनक डॉ. नारायण उराँव 'सैन्दा' उपस्थित थे। पूर्व शिक्षा मंत्री ने कहा कि आदिवासी क्षेत्रों आदिवासी भाषा में पढ़ाई हो तथा भाषा शिक्षकों की बहाली हो।

कुँड़ुख़ कत्थ तोलों सिकि दिवस सप्ताह, सिसई, गुमला

कुँड़ुख़ कत्थ तोलों सिकि दिवस सप्ताह, घाघरा, गुमला

कुँड़ुख़ कत्थ तोलों सिकि दिवस सप्ताह, मुरूम, कांके, राँची

वर्ष – 2019

दिनांक 12.02.2019 दिन मंगलवार को, कुँड़ुख़ भाषा तोलोङ सिकि सप्ताह समारोह 2019 (12 फरवरी से 20 फरवरी तक) का पहला दिन, केन्द्रीय सरना मिलन स्थल, सिसई थाना के सामने, थाना सिसई, जिला गुमला में मनाया गया। समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में पूर्व शिक्षा मंत्री श्रीमती गीताश्री उराँव उपस्थित थीं। समारोह में डॉ. नारायण उराँव, अद्दी अखड़ा के श्री जिता उराँव, श्री सरन उराँव, श्री मंगरा उराँव, श्री भईयारमण कुजूर एवं कई समाजसेवी तथा छात्र मौजूद थें।

कुँड़ुख़ कत्थ तोलों सिकि दिवस सप्ताह, सिसई, गुमला

कुँड़ुख़ कत्थ तोलों सिकि दिवस सप्ताह, बालूरघाट, प०बंगाल

कुँड़ुख़ कत्थ तोलों सिकि दिवस सप्ताह, , हुगली, प०बंगाल

वर्ष – 2020

दिनांक 12.02.2020 दिन मंगलवार को, कुँड़ुख़ भाषा तोलोङ सिकि सप्ताह समारोह 2020 (12 फरवरी से 20 फरवरी तक) का पहला दिन, केन्द्रीय सरना मिलन स्थल, सिसई थाना के सामने, थाना सिसई, जिला गुमला में मनाया गया। समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में पूर्व शिक्षा मंत्री श्रीमती गीताश्री उराँव उपस्थित थीं। इस अवसर पर डॉ. नारायण उराँव, अद्दी अखड़ा के श्री जिता उराँव, श्री सरन उराँव, श्री मंगरा उराँव, श्री भईया रमण कुजूर एवं कई कुँड़ुख़ समाजसेवी तथा छात्र मौजूद थें।

कुँड़ुख़ कत्थ तोलों सिकि दिवस सप्ताह, सिसई, गुमला

कुँड़ुख़ कत्थ तोलों सिकि दिवस सप्ताह, पतराटोली, लोहरदगा

वर्ष – 2021

दिनांक 12.02.2021 दिन षुक्रवार को, कुँड़ुख़ भाषा तोलोङ सिकि सप्ताह समारोह 2021 (12 फरवरी से 20 फरवरी तक) का पहला दिन, कार्तिक उराँव आदिवासी बाल विकास विद्यालय, सिसई, जिला : गुमला के प्रांगन में मनाया गया। समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में तोलोंग सिकि लिपि के सर्जक डॉ. नारायण उराँव तथा विशिष्ट अतिथि के रूप में श्री शिवशंकर कांडेयोंग, टाटा स्टील, टी.सी.सी. के पदाधिकारी उपस्थित थे। इस अवसर पर पांच स्कूल के छात्र–छात्रा एवं शिक्षकगण तथा समाजसेवी मौजूद थे। छात्रों ने अच्छा कार्यक्रम प्रस्तूत किया। वे गाते हुए नुत्य कर रहे थे जो भाषा सीखने की ललक को दर्षाता है।

दिनांक 12.02.2021 दिन षनिवार को, कुँड़ुख़ भाषा तोलोङ सिकि सप्ताह समारोह 2021 (12 फरवरी से 20 फरवरी तक) का अंतिम दिन, संत स्तानिसलास उच्च विद्यालय, पतराटोली, लोहरदगा, जिला : लोहरदगा के परिसर में सम्पन्न हुआ। समारोह में तोलोंग सिकि लिपि के सर्जक डॉ. नारायण उराँव, टाटा स्टील, टी.सी.सी. के पदाधिकारी श्री शिवशंकर कांडेयोंग, स्कूल के हेडमास्टर फा. प्रोभिंसियल फा. रंजीत लकड़ा, फा. सुषील तिरकी, सिस्टर डॉ. आइलिन, सिस्टर उपस्थित थे। इस अवसर पर एराउज संस्था के छात्र–छात्रा एवं समाजसेवी द्वारा मातृभाषा शिक्षा पर आधारित कार्यक्रम प्रस्तूत किया।

वर्ष – 2022

कुँड़ुख़ भाषा तोलोङ सिकि दिवस सप्ताह समारोह 12 फरवरी से 20 फरवरी तक मनाया जाता है। इस वर्ष पहला दिन, कार्तिक उराँव आदिवासी कुँड़ुख़ विद्यालय, छारदा, सिसई, जिला : गुमला के प्रांगन में मनाया गया। समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में तोलोंग सिकि लिपि के सर्जक डॉ. नारायण उराँव तथा विशिष्ट अतिथि के रूप में श्री राजेन्द्र भगत (सचिव, अद्दी अखड़ा, रांची) तथा फा० अगुस्टीन केरकेट्टा उपस्थित थे। 14 फरवरी को बिरसा नगर, जमशेदपुर तथा 13 फरवरी को पुराना सीतारम डेरा, जमशेदपुर में कुंडुख़ भाषा दिवस मनाया गया। सात पड़हा कुँडुख़ विद्यालय, पलमी, भण्डरा, लोहरदगा वाले अंत में मनाये।

कुँडुख़ कत्थ तोलोंग सिकि दिवस सप्ताह समारोह, उराँव समाज समिति, बिरसा नगर, प०सिंहभूम

कुँडुख़ कत्थ तोलोंग सिकि दिवस सप्ताह समारोह, उराँव समाज समिति, पुराना सीताराम डेरा, प०सिंहभूम

कुँडुख़ कत्थ तोलोंग सिकि दिवस सप्ताह समारोह, सात पड़हा कुँडुख़ विद्यालय, पलमी, भण्डरा, लोहरदगा

6. धुमकुड़िया कोरना उल्ला माघ पुनई नू

— डॉ० नारायण उराँव ''सैन्दा''

(बअ़नर माघ चन्ददो नु ख़द्दारिन धुमकुड़िया मंक्खा लगियर अरा ख़द्दर माघ चन्ददो नु धुमकुड़िया कोरआ लगियर। एन्नेम माघ पुनई गे जोंख़ रअ़उर गही माघ पूरआ लगिया दरा पुना अड्डा नु मलता पुना चान नु माघ पुनई ख़ोःख़ा ती जोंख़ रअ़ना ओरे मना लगिया।)

1. धुमकुड़िया एन्दरा तली ? (धुमकुड़िया क्या है?)

उत्तर – धुमकुड़िया, कुँडुख़ (उराँव) आदिवासी समाज की एक परम्पारिक सामाजिक पाठषाला है। प्राचीन काल में कुँडुख़ (उराँव) गांव में यह एक शिक्षण–शाला के रूप में कार्य करता था, जो गाँव के लोगों द्वारा ही चलाया जाता था। समय के साथ यह परम्पारिक ग्रामीण पाठशाला विलुप्त होने की स्थिति में है। कुछ दशक पूर्व तक यह संस्था किसी–किसी गाँव में दिखलाई पड़ता था किन्तु वर्तमान शिक्षा पद्धति के प्रचार–प्रसार के बाद यह इतिहास के पन्ने में सिमट चुका है। कुछ लेखकों ने इसे युवागृह कहकर यौन–शोशन स्थल के रूप में पेश किया, तो कई मानवशास्त्री इसे असामयिक बतलाये, किन्तु अधिकतर चिंतकों ने इसे समाज की जरूरत कहते हुए सराहना की। आदिवासी परम्परा में मान्यता है कि –
धुमकुड़िया, लयवद्ध तरीके से सामाजिक जीवन जीने की कला सीखने एवं सभी व्यक्तियों का कौशल विकास केन्द्र है। (It is a traditional social rhythmic learning system and skill development center among Oraon tribe.

कुँडुख़ (उराँव) आदिवासी समाज में धुमकुड़िया एक ऐसी शास्वत व्यवस्था थी जो सभी गांव एवं सभी टोला हुआ करता था, जहां गांव–टोला के सभी लड़के–लड़की बच्चे (लिंग भेद रहित) शामिल होते थे। ऐसा उदाहरण किसी भी देश या समुदाय में सामान्य रूप से नहीं दिखता है। वैसे भारतीय इतिहास में पुराने राजा–महाराजाओं के राजपाट में गुरूकुल नामक संस्था हुआ करता था, जिसमें सिर्फ शासक वर्गों के पुरूष बच्चे ही प्रवेश पाते थे। जन–साधारण के लिए वहाँ प्रवेश नहीं था अथवा वर्जित था।

2. धुमकुड़िया कोरना एन्दरा तली? (धुमकुड़िया प्रवेश क्या है?)

उत्तर – प्राचीन समय में, कुँडुख़ (उराँव) समाज में धुमकुड़िया में प्रवेश के लिए एक उम्र सीमा निर्धारित थी। गांव में बच्चे के 7वें वर्ष में धुमकुड़िया प्रवेष कराया जाता था। बच्चे के माता पिता बच्चे के बैठने के लिए चटाई, दीया जलाने के लिए करंज तेल आदि लेकर माघ महीने के शुक्ल पक्ष (बिल्ली पक्ख/इंजोरिया पक्ष) में प्रवेश कराया जाता था। बच्चे के माता पिता सहर्ष धुमकुड़िया से जोड़ने हेतु प्रवेश कराया करते थे।

3. माघ पूरना एन्दरा तली? (कामगार/धांगर लोगों का तय समय पूर्ण होना क्या है?)

उत्तर – पूर्व में, कुँडुख़ (उराँव) समाज में खेती–किसानी किसी दूसरे घर के नवजवान को एक खास समय तक के लिए तथा काम के बदले आनाज या उसके समतुल्य कोई वस्तु निर्धारित देनदारी तय किया जाता था। यह एक गरीब मजबूर के जीवन बसर का एक तरीका भी था। इन कमियां लड़के का कार्यकाल माघ महीने तक तय किया जाता था। चूंकि खेतीबारी कार्य में धान कटनी–मिसनी कार्य अगहन–पूस तक समाप्त हो जाता है तथा पूस महीने में कुण्डी अरगना (हड़गड़ी) नेग होता था। अतएव इस महीने में किसी का बिदाई या अदाई नहीं किया जाता था। इस तरह खेतीबारी कार्य का एक सफल चक्र माघ महीने में पूरा होता था। इसी तरह जब किसी नये कामगार को लाये जाने या उसके अवधि विस्तार किये जाने का कार्य भी माघ महीने में तय कर लिया जाता था। फागुन महीने में गांव का नया दामाद तथा नया कामगार को गांव के फग्गु सेन्दरा में शिकार खेलने लिए ले जाया जाता था। फागुन पूर्णिमा को कटता था तथा दूसरे दिन चैत पइरबा को धूली हीड़ना (धूरहेंड़) होता था तथा तीसरे दिन जरजरी बेःचना (सामुहिक शिकार का रूप) के बाद करमा त्योहार तक के लिए शिकार खेलना मनाही हो जाता था। खासकर हरियनी पूजा से करम पूजा तक जंगल से दतुन–पतई भी करना मनाही था। चैत महीने में ख़ेख़ेल बेंज्जा के बाद खेत में धान बीज डालने का कार्य आरंभ किये जाने का रिवाज था।

4. पेल्लो एड़पा एन्दरा तली ? (किषोरी गृह क्या है?)

उत्तर – धुमकुड़िया में छोटे उम्र के बच्चे–बच्चियों (कुक्कोस–कुकोय) के शिक्षण में लिंग भेद नहीं होता है। परन्तु जैसे–जैसे उम्र बढ़ता है वैसे–वैसे सामाजिक जिम्मेदारी भी बढ़ती है। बड़े उम्र के लड़कियों के लिए पेल्लो एड़पा की अलग व्यवस्था हुआ करती थी, जहाँ लड़को या मर्दों का प्रवेश वर्जित माना गया है। पेल्लो, वैसे बच्चियों को कहा जाता है जिसका मासिक धर्म षुरू हो गया हो और शारीरिक विकास

दृश्टि से एक पूर्ण नारी के गुण विकसित होने लगा हो। पूर्व में वैसे किशोरियों के लिए एक समारोह या अनुष्ठान के माध्यम से पेल्लो एड़पा मंक्खना (किशोरी गृह प्रवेश) नेग किया जाता था। यह पेल्लो एड़पा धुमकुड़िया कैम्पस में अलग से एक व्यवस्था होती थी। कहीं–कहीं यह घर किसी विधवा औरत के घर पर भी हुआ करता था जिससे उस वृद्धा को लोगों का सहारा भी मिलता था। इसी तरह लड़कियों के लीडर को पल्लो कोटवार तथा लड़कों के लीडर को जोंख़ कोटवार कहा जाता है। कई लेखक धुमकुड़िया को जोंख़ एडपा कहते हैं, पर यह सही नहीं है। धुमकुड़िया में लड़के एवं लड़कियाँ समान रूप से सहभागी हैं परन्तु पेल्लो एड़पा में उम्र के के दृष्टिकोण से एक अनुशासनात्मक अलगाव है, जो सामाजिक सुरक्षा की नियम से अनुचित नहीं है। यूं तो किशोरी गृह या पेल्लो एड़पा (किशोरी गृह) या जोंख़ एड़पा (किशोर गृह) कोई अलग–अलग घर नहीं बल्कि यह एक मानक व्यवस्था एक मानक रेखा है जो बडे उम्र के किशोर–किशोरियों के बीच एक अनुशासन बनाये रखता है।

उम्र बढ़ते के साथ जब किसी लड़के या लड़की का बेंज्जा (विवाह) निर्धारित हो जाता है, तब उस लड़के या लड़की को धुमकुड़िया से विदाई किया जाता था। यहाँ पठन–पाठन का कार्य कोहाँ तूड़ (सिनियर वर्ग) के छात्रों द्वारा किया जाना चाहिए। वर्तमान में यहां एक अनु शिक्षक (पारा शिक्षक) के तौर पर किसी जानकार व्यक्ति को ग्राम सभा द्वारा चयनित किया जा सकता है। समय की मांग के अनुसार सभी सदस्यों को यह आजादी होगी कि वे शनिवार एवं रविवार को छोड़कर अपने सुविधा के अनुसार ही धुमकुड़िया में शामिल होंगे।

5. जोंख़ एड़पा एन्दरा तली? (किशोर गृह क्या है?)

उत्तर – जैसा कि हम सभी जानत हैं कि बच्चे–बच्चियों (कुक्कोस–कुकोय) का 7वें वर्ष में धुमकुड़िया प्रवेश करवाया जाता था, परन्तु धुमकुड़िया के सामने यदि छोटा बच्चा आए तो उसे दूर नहीं किया जा सकता है। अतएव उसे Pre-nursery या Nursery की तरह लेदका तूड़ की गिनती में रखा जाएगा। छोटे उम्र के बच्चे–बच्चियों (कुक्कोस–कुकोय) के शिक्षण में आरंभिक दौर में धुमकुड़िया में लिंग भेद नहीं होता है। परन्तु जैसे–जैसे उम्र बढ़ता है वैसे–वैसे सामाजिक जिम्मेदारी भी बढ़ती है। बड़े उम्र के लड़कियों के लिए पेल्लो एड़पा की अलग व्यवस्था हुआ करती थी, जहाँ लड़को या मर्दों का प्रवेश वर्जित माना गया है। पेल्लो, वैसे बच्चियों को कहा जाता है जिसका मासिक धर्म शुरू हो गया हो और शारीरिक विकास दृस्टि से एक पूर्ण नारी के गुण विकसित होने लगा हो। पूर्व में वैसे किशोरियों के लिए एक समारोह या अनुष्ठान के माध्यम से पेल्लो एड़पा मंक्खना (किशोरी गृह प्रवेश) नेग किया जाता था। यह पेल्लो एड़पा धुमकुड़िया कैम्पस में अलग से एक व्यवस्था होती थी। कहीं–कहीं यह घर किसी विधवा औरत के घर पर भी हुआ करता था जिससे उस वृद्धा को लोगों का सहारा भी मिलता था। इसी तरह लड़कियों के लीडर को पल्लो कोटवार तथा लड़कों के लीडर को जोंख़ कोटवार कहा जाता है। कई लेखक धुमकुड़िया को जोंख़ एडपा कहते हैं, पर यह सही नहीं है। धुमकुड़िया में लड़के एवं लड़कियाँ समान रूप से सहभागी हैं परन्तु पेल्लो एड़पा में उम्र के के दृष्टिकोण से एक अनुशासनात्मक सांकेतिक अलगाव है, जो सामाजिक सुरक्षा की नियम से अनुचित नहीं है। यूं तो किशोरी गृह या पेल्लो एड़पा (किशोरी गृह) या जोंख़ एड़पा (किशोर गृह) कोई अलग–अलग घर नहीं बल्कि यह एक मानक व्यवस्था एक मानक रेखा है जो बडे उम्र के किशोर–किशोरियों के बीच एक अनुशासन बनाये रखता है।

6. धुमकुड़िया कोरना तथा पूरना उल्ला एन्दरा तली? (धुमकुड़िया प्रवेश तथा समापन दिवस क्या है?)

उत्तर – कुँड़ुख़ समाज में सामाजिक जीवन जीने के लिए शिक्षण–प्रशिक्षण के जैसा धुमकुड़िया नामक एक सामाजिक पाठषाला हुआ करता था, जो वर्तमान में शिथिल है। यह सदियों से समाज द्वारा संचालित हुआ करता था। इसमें प्रवेश के लिए बच्चे का 7वां वर्ष उम्र सीमा होती थी। देर होने पर अधिक उम्र में भी प्रवेश होता था। इसमें प्रवेश के लिए माघ महीना निर्धारित था। इसी तरह खेती किसानी कामगार का तय समय का समापन माघ महीना ही होता था। खेती किसानी कामगारों के लिए निर्धारित समय सीमा पूरा होने की स्थिति को माघ पूरना भी कहा जाता है। इस तरह बच्चों के लिए प्रवेश दिवस तथा जो नवजवान धुमकुड़िया शिक्षा पूर्ण कर चुकने वाले के लिए समापन दिवास होगा।

7. धुमकुड़िया कोरना–पूरना उल्ला माघ पुनई गेम एन्देर गे ? (धुमकुड़िया प्रवेश–समापन दिवस माघ पूर्णिमा को क्यों ?)

उत्तर – वर्तमान समय में आधुनिक शिक्षा विकास के साथ गांव की दिशा दिनों दिन असमान्य होते जा रही है। गांव की उर्जा शहर की ओर जाकर वहीं रूक जा रही है। नतीजा यह हो रहा है कि गांव में ज्ञान का राह दिखाने वाला नहीं मिल रहा है। शहर में रहने वाले से भी उनका खतियानी निवास पूछा जा रहा है, वैसे में आदिवासी समाज करे तो क्या करे? अब समय

आ गया है कि आदिवासी समाज अपने बच्चों को बचपन से ही समाज के बारे में बतलाये। कुँड़ुख़ समाज में धुमकुड़िया एक सामाजिक पाठशाला है, जो सदियों से समाज द्वारा संचालित किया जाता रहा था। इस सामाजिक पाठशाला के द्वारा भासा तथा संस्कृति संचारित होती थी किन्तु आधुनिक पाठशाला के आने के बाद यह पम्परागत पाठशाला विलुप्ति की कगार पर है। बताया जाता है कि धुमकुड़िया प्रवेश माघ महीने में होता था तथा कामगार सेवकों की विदाई (अर्थात माघ पूरना) भी माघ महीने में ही होता था। इस तरह यदि आधुनिक स्कूल तथा शिक्षकों को साथ लेकर माघ महीने का पूर्णिमा का दिन एक उपयुक्त समय है क्योंकि माघ पूर्णिमा को सरकारी छुट्टी होती है। वैसे में गांव में रहने वाले तथा रोजगार के लिए गांव से बाहर रहने वाले, सभी गांव आकर अपने पूर्वजों के खतियानी निवास को देखा करेंगे। यही सोचकर धुमकुड़िया कोरना–पूरना उल्ला को माघ पुनई में निर्धारित किया गया है।

8. एन्देर, इन्नेलता बेड़ा नु धुमकुड़िया कोरना–पूरना उल्ला मनबअ़ना गही दरकार रअ़ई? (क्या, आधुनिक समय में धुमकुड़िया प्रवेश–समापन दिवस मनाने का आवश्यकता है?)

उत्तर – हाँ, आवश्यकता है। केन्द्र एवं राज्य सरकार राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, वर्ष 2022 से लगा दी जाएगी, जिसके तहत झारखण्ड में 5 आदिवासी भाषाएं पढ़ाई जाएंगी। इस नीति के तहत स्कूल पूर्व शिक्षा की जिम्मेदारी कई राज्यों में आंगनवाड़ी केन्द्र (Anganwadi) को दिये जाने की जानकारी मिली है। यहाँ तथ्य है सभी आंगनवाड़ी सेविका आदिवासी भाषा नहीं जानती हैं, वैसी स्थिति में बच्चों को एक आदिवासी भाषा नहीं जानने वाले के जिम्मे बच्चों को सौंपना पड़ेगा, जो बच्चों के भविष्य के लिए हितकर नहीं है। इस स्थिति में पम्परागत सामाजिक पाठशाला धुमकुड़िया को फिर से जागृत तथा विकसित करना पड़ेगा और अभी के समय में धुमकुड़िया में श्रुति साहित्य के साथ लिखित साहित्य को पाठ्यक्रम में शामिल करना ही पड़ेगा। ऐसा करने पर गाँव में रहते हुए आदिवासी भाषा पर आधारित रोजगार में भी आगे बढ़ा जा सकता है। ऐसे उदेश्य के साथ धुमकुड़िया कोरना तथा पूरना उल्ला को माघ पुनई में मनाये जाने की आवश्यकता है और हमें इस ओर आना पड़ेगा।

9. नमन धुमकुड़िया कोरना–पूरना उल्ला नु ख़द्दर गने संग्गे मनना दरकार रअ़ई का मला? तेंग्गा! (हम सभी को धुमकुड़िया प्रवेश तथा समापन दिवस में बच्चों के साथ शामिल रहना चाहिए या नहीं रहना चाहिए? बतलाएँ !)

उत्तर – आइये, हम सभी अपनी भाषा संस्कृति एवं रूढ़ी परम्परा की सुरक्षा तथा अपने बच्चों के जीवन संवारने में अपनी सहभागिता निभाएँ।

धुमकुड़िया, सैन्दा, सिसई, में माघ पुर्णिमा को धुमकुड़िया कोरना उल्ला (प्रवेश दिवस) सम्पन्न। इसमें गांव के इंजिनियर युवा भी शामिल हुए।

आलेख : डॉ. नारायण उराँव, मो0 : 9771163804

೬. ಹಾಡೋಣ ಬಾ (ಭಕ್ತಿ ಲಹರಿಯ ಆಯಾಮ ಪ್ರಾಮುಖ್ಯತೆಗಳನ್ನಾಧರಿಸಿ ಬರೆದ)

(ಪ್ರಾಮುಖ್ಯ ಇಲ್ಲ : ಇವನ ಲಘಿಯಾಲಾಲ ಇಲ್ಲಿದೆ, ಗೀತಗಳು ಬಾಲಾಜಿಯಾ : ಕೆಲ ಜಾಹಿರಾತಿಗೆ ಇಲ್ಲಿದೆ)

ಹಾಡೋಣ ಬಾ ಅಭಿಮಾನದಿ ಜೀವನ ಪೂರ್ತಿ, ಮರೆತು ಬಿಡುವ ಭೇದಭಾವವ ಮನದಿ ಕ್ಷಣದಿ.
ನಾವೆಲ್ಲ ಬಾ ಅಭಿಮಾನದಿ ಜೀವನ ಪೂರ್ತಿ, ಮರೆತು ಬಿಡುವ ಭೇದಭಾವವ ಮನದಿ ಕ್ಷಣದಿ.
ಹಣ್ಣು ಅಭಿವೃದ್ಧಿ ಬಳಗದ, ಸಹಾಯಕ ಪ್ರಾಧ್ಯಾಪಕರುಗಳು, ಎಲ್ಲರ-ಮನಸ್ಸಿನ ಬಾಲಾಜಿ ಜಾಹಿರಾತಿಗೆ ಜಾಹಿರಾತಿಗೆ
ಮುಕ್ತ ಶ್ರೀಕಾಳಿಯಾಗಿ ಅಭಿಲ ಬಾಬಾಜಿಯವರು.
ಸಾಹಿತ್ಯ ಜಾಹಿರಾತಿ ಬಳಸಿದಾಗಿಯೂ ಬಳಸಿದಾಗಿಯೂ ಬಳಸಿದಾಗಿಯೂ

7. राःजी गे (वीर बुधू भगतस गही ओहमा डण्डी)

(टूःडूस : बिष्नाथ उराँव, कुँड़ुख़ तरजुमा : डॉ. नारायण उराँव ''सैन्दा'')

1. राःजी गे चिच्चस तंगआ जिया, जिया रे, वीर बुधू भगतस महान।
ख़ज्जे गे चिच्चस तंगआ जिया, जिया रे, वीर बुधू भगतस महान।
चोआ निजड़ा गुचा, होरमा झारखंडीयर, सङी–जोड़ी मनर,
ननोत वीर षहीद सिन मोन्जरा।
हईरे नमहँय छोटानागपुर, हईरे नमहँय हीरानागपुर।।

2. टिको धरती सुना मंज्जा, रूनियाँ–झुनियर मेट्टरर केरर,
हरधर–गिरधरर गही वीर दाँःड़े, बछाबआ गे ख़ल्ले–उखड़िन।।2।।
अम्मे लेखे ख़ेंःस ती कूम दोहोर ख़ाड़ मंज्जा,
अम्मे–टोड़ंग परता–ख़ल्ल केरा, निंगहय ख़ेंःस अम्मे मंज्जा,
एन्देर केरर निंगहय जोंःख़र, धरती नमहँय उरमिन्ती महान।
हईरे नमहँय छोटानागपुर, हईरे नमहँय हीरानागपुर।।

3. सिलागामी पद्दा टुंगरी, डुगडुगिया चोंगारी, घोड़लता, कौड़ी हजार,
टोंग'ए धरअर सिसोबारी।
निंगहय ख़ीरी गढ़आ गे गोली लवरर, अकय आःलर,
कोईल ख़ाड़, एमना अड्डा, तड़री चल्लरा ताःका बेसे,
सूर बीरस घी नीम हूँ ख़द्दर, मेट्टरा केरा, निंगहय चिन्हा,
हईरे नमहँय छोटानागपुर, हईरे नमहँय हीरानागपुर।।

4. लरका देवस कन्ना लवचस, पखनन्ती उरखा बीर अम्मे,
घोरअर उईयर हुलहुली पंईकर, चिच्चर जिया निंगहय जोंख़र।
पोल्लस पंडरू इम्मपेस, कोल वीःरस सिन धरअर लवआ,
ची लघचस वीर सिरनी, तंगआ कुक्कन तड़री गे।
एकसन बिद्दकर एन्ने कुरबान, नंज्ज केरस ओन्टे उलगुलान।
हईरे नमहँय छोटानागपुर, हईरे नमहँय हीरानागपुर।।

5. अद्दी भखा मेट्टेरा केरा, अखड़ा, धुमकुड़िया सुना मंज्जा,
संगीजोड़ी नमहँय सान, पड़हा पहान नमहँय तीर कमान
नमहँय देष, नमहँय राःजी, एन्देर केरा निंगहय नाःमे,
मल उड़तूर'ई निंगहय ख़ेंःस, एःरर दसा निंगहय राःजी,
नीम एन्देर गे बिडिरका रअ़दर जोंःख़र, ने ननो आउर उलगुलान ?
हईरे नमहँय छोटानागपुर, हईरे नमहँय हीरानागपुर।।

6. राःजी गे चिच्चस तंगआ जिया, जिया रे, वीर बुधू भगत महान।
ख़ज्जे गे चिच्चस तंगआ जिया, जिया रे, वीर बुधू भगत महान।
चोआ–निजड़ा गुचा, भईया–बहीन बरा, अम्मे–पतड़ा–ख़ल्लन,
होरमत मिलिरआ की बछाबआ।
चोआ–निजड़ा–गुचा, भईया–बहीन बरा, निसा ओननन अम्मबा,
असतित्वन बछाबआ।
सङी–जोड़ी गुचा, भईया–बहीन बरा, भखा–संस्कृति–परम्परन बछाबआ।

*****

೨. ಶೀಘ್ರವಾಗಿ ಬಾ:ಜಿ ಲಘಲಘ ಹಾಲುಹೊರು ಗೀತಗಳು ಮಕ್ಕಳಿಗಾಗಿ

(ರಚನೆ : ಡಾ|ಎಲ್ ಜಯಶೀಲರವರ ಸಹೋದ್ಯೋಗಿ, ಲಕ್ಷ್ಮಿ ವಿ. ಗೀತಗಳು ಸಂಗ್ರಹ ಮಾಡಿದವರು))

೧. ವಂದಿ ರಾಜರಿಗೆ ಲಾಲಿಹಾಡು ಲಾಲಿಸಿ*ಜಿಂದ ಲಾಲಿಹಾಡು,
ಮಜಿಜಲ ಧರಿಂದ, ಧರಿಶಿಲಾಬಿ ಜಾಯಿಜಾಡಿ, ಜಂ ॥೪॥
ಡಾವಿಜಿಯಿ-ಧರಿಡಾರಿ-ಯಿಲುಜಿಬಿ ಂರಿ, ಲಾಲಿಸಿ*ಜಿಂದ ಲಾಲಿಹಾಡು,
ಮಜಿಜಲ ಧರಿಂದ ಧರಿಶಿಲಾಬಿ ಲಾಲಿಹಾಡು, ಜಂ ॥೪॥

೨. ಕಿಂ. ಹಾಲಿಬಿಯಾಜಿ ಸಹೋಜಿ ಡಾವಿಜಿಯಿ ಲಾಲಿಯಾಡು,
ಮಜಿಜಲ ಧರಿಂದ ಮಜಿಯಿಂಲಿ ಸಲಿಲಿಹಾಡು,
ಾಜಿಂಜಿಸ ಹಾಲುಯಾಜಿ ಖಾಜಿಬಿಯ ಜಿಸಿಹಾ ಲಾಲಿಹಾಬಿ ಜಾಯಿಜಾಡಿ, ಜಂ ॥೪॥
ಗೀಜಿಸಿಂ ಹಾಲಿಲಾಜಿ ಯಿಸಿಶಿಹಾಡು, ಮಜಿಯಿಂಲಿ ಸಲಿಲಿಹಾಡು,
ಂಲಿಲ'ಾ ಶೀಜಿಸಿಹಾ-ಬಾ:ಜಿಸಿ ಲಘಲಘ ಮಜಿಯಿಂಲಿ ಲಿಖಿಯಿಯಾಡು] ಜಂ ॥

೩. ಫಲಿಯಿಯಿ ಂರಿ ಫ ಲಾಲಿಹಾ, ವಖಿಲಾಡು ಂರಿ ವ ಜಾಗಿಹಾ,
ಸಹಲಾಡು ಲಾಾಜಿ ಖಾಜಿಹಿಘಲ ಖಾಜಿಹಾಡು, ಜಂ ॥೪॥
ಸಹಿಜಾಜಿ ಯಘ ಸಿ ಜಾಗಿಹಾ, ಾಯಿಖಿಫಿಯಾಜಿ ಯಘ ಾ , ಜಂ,
ಾ:ಜಿಸಿ ಯಘ ಾ ಲಾಾಜಿ ಂಲಿಲಿಯಾಡು, ಜಂ ॥೪॥

೩. ಬ ಡ ಲ ಳ ಐ ಂರಿ ಸ:ಜಂ ಹಾಜಿಯಾಜಿ
ಂ ಜಿ ಯ ಖ ಜಿ ಲಾಜಿಸಿಐ, ಬಸಿಜಿಶಾ ಬಾಲ ಲಾಯಿಯಾಡು, ಜಂ ॥೪॥
ಬ ಡ ಲ ಳ ಐ ಜಾ:ಯಘ ಸಿಕೆ ಹಾಲುಸಿಾಯಿ ಖಿಲಿಐ,
ಬಾಯಿಪಿ, ಲಾಜಿ'ಿ ಫಲಿಸಾಯಿ ಡಾಡಿಸಿಸ ಜಿಘಿಶಘ ಡಸಿಜಿಯಡಿಸಿಐ, ಜಂ ॥೪॥

೪. ಾಡಾಲ ಡಿಕೆಡಾಾ ಹಾ:ಐಘ ಸಿಂ ಬಸಿಂಿ ಹಾಲುಾಾ ಡಾಬಬಜಾಾ,
ಬಸಿಂಿಫಿಜ ಲ:ಜಾಜಿ ಂಿಸಿಾಾ-ಡಾಾಡಾ ಡಾಸಿಜಾಾ:ಜಾಾ, ಜಂ ॥೪॥
ಸಿಂಿಜಿಯಿ-ಾಲಜಿಘಂಿ-ಡಿಕೆಡಿಂ, ಸಹಯ ಡಾಲಯಘ ಘಂಿಂಿಜಾಾ,
ಹಾಾಯಂಿ-ಜಸಿಯಾಜಿ ಯಾಜಿಘ ಜಸಿಜಿಯಿ ಧರಿಂಿ ಂಿಫಿಡಿಂಿಜಾಾ, ಜಂ ॥೪॥

೪. ಘಂಿಂ ಲಘಧಘ ಲಾಲಾಾ ಯಾಜಿ, ಂಿ:ಹಾಾ-ಜಘಲಲಾಾ-ಂಿ:ಹಾಾ ಹಾಜಿಹಾಾಜಿ,
ಾಜಿಹಾಘಲ ಂಿ:ಹಾಾ-ಜಘಲಲಾಾ-ಂಿ:ಹಾಾ ಂಜ:ಘಾಾ ಯಘ ಸಂಿಿಡಾಾ:ಜಾಾ, ಜಂ ॥೪॥
ಧಿಜಜಾಂಜಿಜಂಿ ಂಾಾ ಧಿಜಜಾಂಜಾಿಿಜಂ ಘಂಿಂಿ ಲಘಧಘ ಧಿಜಜಾಂಾಾ:ಜಾಾ,
ಾಜಿಹಾಘಲ ಜಘಯಡಾಾಜಿ-ಡಾಾ:ಜಿಸಿ, ಬಸಿಜಿಶಾ-ಬಾಲ ಹಾಲುಾಾಯಿ ಸಂಿಯಾಾ:ಜಾಾ ಜಂ ॥೪॥

೬. ಡಾಂಜಂಸ ಂಾಾ ಲಾಜಿಜಂಿ, ಡಾಡಿಂಜಸಿಜ ಜಿಸಿ ಡಾಂಜಿಿಂಡಾಾಾ,
ಾಜಿಹಾಘಲ ಂಿಿಡಾಾ, ಜಸಿಜಿಯಲ ಧರಿಂಿ ಜಿಸಿ ಸಿಜಿಂಿಿಿಡಾಾ, ಜಂ ॥೪॥
ಂಿಿಡಾಾ ಘಲಾಾಯಿ ಲಾಾ:ಂಾಾ, ಡಾಡಿಾಾ-ಲಾಜಿಾಾ-ಜಿಿಂಿಡಿಘಾಾ,
ಡಿಜಿಘಂಾಜಿ ಯಘ ಜಸಿಜಿಯಲ ಧರಿಂಿ ಜಿಸಿ ಯಾಜಿ'ಾಾ,
ಘಾಿಜಿಜ, ಜಾಜಿಸಿಜ ಾಜಿಜಘ ಜಾಜಿಜಂಾಜಿ'ಸ ಜಾಾ:ಜಿಸಿ ಜಂಘ,
ಲಾಾಿಜಿಜಾಾಜಿಜ, ಬಾಜಿ'ಸಿಜ ಾಜಿಜಘ ಬಾಜಿಜಂಾಜಿ'ಸ ಜಾಾ:ಜಿಸಿ ॥೪॥

- ಡಾಾಲಿಿ ಧಿಜಯಾಜಿಜಂಿ ಸಹೋದ್ಯೋಗಿ
ಲಿ.ಗಿ. (ಗೀತಗಳು), ಬಸಿಜಿಂಜಾಾ ಂಾಜಿ
ಬಾಬಬಾಾ : ಡಿಸಿಜಿ ಂಘಜಿಯಿ ಾಜಿಜಘಾಾ
ಬಸಿ. : ಡಿಸಿಜಿ, ಂಾಾಜಿಾಾ : ಜಿಸಿಾಾಜಿಬಾಯಿಾಾ
ಡಿಕೆಡಾಾ : ಜಿಸಿಾಾಜಿಬಾಯಿಾಾ (ಂಾಾಜಿಯಾಜಿಜಂ)

8. खोंड़हा चाःलो बेसे नमहँय कुँडुख़ तोड़पाब

1. एका तरती बरचस, बचतु'उस बरचस,
तोलोंग सिकि सिखाबआ बरचस, रे ।।
सैन्दा, सिसई, गुमला ती, बचतु'उस बरचस,
तोलोंग सिकि सिखाबआ बरचस, रे ।।

2. डॉ० नारायन उराँव 'सैन्दा' बबस,
तोलोंग सिकि तोड़पाब ओत्थरस,
अक्कु नमन दवले कुना बचतअ़आ लगदस, रे।।
कुँडुख़ कत्थन घोखचस, तोड़पाब ओत्थरस,
तंगआ खोंड़हा–चाःलो बेसे तोड़पाब बिद्दयस, रे।।

3. इंग्गयो ती इ मंज्जा, एम्बस ती ए मंज्जा,
उरबस ब'अर धरमेन धरचस, रे।।
ओरमत गे ओ मंज्जा, अद्दीयर गे अ, रे,
आःलो गे आ बअर तेंग्गदस, रे।।

4. प फ ब भ म ती ओःरे ननर,
त थ द ध न बअ़नुम, पुरखा पाब बअ़दस, रे।।
क ख ग घ ङ राःगे हूँ नमहँय दिम,
पहें, बर'ई इबड़द ककड़ो लेखे चुरूगनुम, रे।।

5. अयंग कोंयछा नाःमे ही पुथी नमा गे छप्परा,
पुथिन एःरर जिया–कया सहरारा, रे।।
हिन्दी–अंगरेजी–कुँडुख़, ओन्द संग्गे एत्थरा,
नागरी–रोमन गने तोलोंग सिकि हूँ तेस्सरा, रे।।

6. एका लेखे बबा गर, तीःना–डेब्बा–तीःना नननर,
अन्नेम तीःःना–डेब्बा–तीःना टूड़ा गे ननताःरा, रे।।
सिरजरनी ता सिरजरईन एका बेसे सिरजाःरा,
अन्नेम नेगचार–चाःलो, पुरखा–पाब नमहँय उजगाःरा रे।।

7. कट्टु ता मण्डी, कलछुर नु लटिख़या,
अन्नेम जिया, तोलोंग सिकि नु उक्किया, रे।।
जिया एंगहय बाःचा, कला–बरा–निजड़ा,
कुँडुख़ गे तोलोंग सिकिन हूँ धरआ,
भईरो, ननोर होले ननतार'ओ काःलो, रे
बहिना'रो, मनओर होले मनतार'ओ काःलो।।

ई कत्थडण्डी, सयडी सुगन्ती उराँव गही टूड़का तली। इदिन सयडी सुगन्ती नेड्डा 14 मार्च 2022 गे मुड़मा पड़हा जतरा खुटा शक्तिस्थल गुसन मंज्जका कार्यशाला नू तंगअय घोःखन डण्डी छाव ती कुँडुख़ कत्था तोलोंग सिकि ही पईत्त नू पाःड़िया दरा तिंग्गया।

– बी०ए० (कुँडुख़), अंतिम वर्ष
ग्राम : जोरी चेरगो टोला
पो० : जोरी, थाना : लोहरदगा
जिला : लोहरदगा (झारखण्ड)

୧. ଯୁଝୁଥିବା ଦୁଇ ଭାଇଙ୍କୁ ଯାଇଥିଲା ସାଧୁମାଇ

(ରଚୟିତା : ଡାଏ ଯୋଗାଧ୍ୟମ ବିଭାଗ, ରାଜ୍ୟସ୍ତରୀୟ ପୁରସ୍କାର ପ୍ରାପ୍ତ ଶିକ୍ଷକ, ଜିଲ୍ଲା)

୧. ପାଣିଟା ଦୁଇ ଜିତୁଥାନ୍ତି, ଯୁଦ୍ଧ, ବିରୁ'ସ
ଶୁଖୁଥା ଦୁଇ ମୁହଁ, ଦାଢ଼ିଥିଲା, ଲମ୍ବା, ଘୁଙ୍ଗୁରିଆ, ଭୟଙ୍କର, ଦିଶିଲା,
ଯୁଝୁଥିବା ଯୋଦ୍ଧା ମିଳିତ ଦୁଇ ଭାଇଙ୍କୁ, ଯୁଦ୍ଧରେ, ବିରୁ'ସ ନେଇ,
ଗାଆଁର ସାଧୁବାବାଙ୍କ ଘରକୁ, ଜିତୁଥାନ୍ତି, ଯୁଦ୍ଧରେ, ଦୁଇଜଣଙ୍କ ମଧ୍ୟ ଲଢ଼ିବାକୁ,
ଦେବତାର ସାଧୁବାବାଙ୍କ ମନ୍ତ୍ରର ଜାଦୁରେ, ଁକୋକ-ଶୋରୋକ ଯୁଝୁଥିବା ଏକା ହୋଇଯିବେ,
ଘଘାଯୁଦ୍ଧ ଯୋଦ୍ଧା ବନ୍ଧୁତ୍ୱ ଦୁଇ, ମୋଟୁଥା ଦୁଇ, ମନ୍ତ୍ର ନେଇ ଘାଘରେ ଯୁଝୁଥିବା ସାଧୁବାବାଙ୍କ,
ଘଘାଘାଘ ଘାଘରେ ଘାଘୋଗୁ ଏକେ-ଏକେ ଘାଣିଥା-ଘାଣିଥା, ଘାଥା-ଘାଥୁ ଘାଘାଙ୍କ.

୨. ଏକା ମନିଥା ଆଯୁଥାଟିଙ୍କୁ ଜିଁଦୁଙ୍କ-ଘଘୁଁଘାଙ୍କ ?
ମୁଖୁଥା ଯୁଦ୍ଧରତ୍ନ ରାଜ ଘଘଜଙ୍କୁଘାଟିକ ବାଦ୍ୟଗୁରୁଘାଟି ରାଜ ଜୀବନଘଘଳ ଘଘଯୁଥା ସାଧୁଥାଙ୍କ,
ବାଦ୍ୟଘାଜ ଦୁଇ ସାଆଁଘାଟିଘଘଳ ଏଟା ଜୀମଘାଜ ସାଧୁରୁ ଘଘଜଙ୍କୁ ସାଧୁଜୀବ,
ମନିଥାଆଟା ଜୀମଘଘଟ ଘଘଁଟା ରାଜ ଘାଜୁଜ, ପାଜୁଟା ଘଘଁଟା ଦୁଇ,
ଟିକ ଜୀଘଘାଘ ପୁଜଙ୍କାଜ ରାଜ ସାଦୁଙ୍କ ଘଘଥାଜୁଥା ଜୁଘଜୁଜୁଜୁଟା ଥାଥାଥା ସାଧୁଥାଙ୍କ,
ଘଜୁଜୁଜ ଠାଦୁଙ୍କ ଏଜୁଜୁଜ
ଜୁଥାଦୁଘ, ଜିଁଜୁଜ, ଜୁଘଘଜୁଟା, ଜୁଜୁଜୁଜୁ ଜୁଦୁପ ଦୁଥାଘଦୁଜୁଜୁଟା ଥାଥାଥା ଟିକ ଜୁଘଘଘଘ !

୩. ଟିକ ଘଃଜୁଟା ସାଧୁଥାଙ୍କ - ଶୁଖୁଥା ରାଜ ଜୀଘଦୁଜୁଜୁଥାଘ, ଠାଜୁଥାଟାଦୁ ଜୀଜୁଜୁଜୁଟା,
ପାଦୁଜୁଥା ଯୋଜୁଜ ପୁଜଙ୍କାଦୁଜୁଟା ଘାଙ୍ଗ ଜୁଜୀଜୁଙ୍କ ଜୁଜୁଜୁଜୁ ରାଜ ଜୁଜୁଜୁଜୁଟାଥା ଥାଜୁଜୁଜୀଥା,
ମଘଜୁଜ ରାଜ ଥଘଃଜୁଥାଥା, ଥାଁଜୁଜ ସାଘଙ୍ଗଘ ଜୀଜୁଜୁଟା ଦୁଜୁଜୁଜୁଜୁଟା ଥାଥାଥା ରାଜ ଥାଜୁଜୁଜୀଥା,
ଘଦୁଥାଘଘା ଥଦୁଘଘଥା ଘଘଘଙ୍ଗଟା ଜୁଟା ଜୁଦୁଜୁ ଏକା ଘଦୁଜୁଜୁଜୁ ଥାଥାଥା ଦୁଜୁଜୁଜୁଜୁଟା ଘଘଥ,
ଘଜୁଜୁଜ ଟିଦୁଙ୍କ ଘାଥୁଟା ଜୁଜୁଜୁଜୁ ଜୁଜୁଜୁଜୁଟାଥାଥା,
ଜୁଜୁଜୁଥାଥାଥା, ଜୀଜୁଜୁଜୁଜୁଟାଥାଥାଘ ଘଃଜୁଟା ସାଧୁଥାଙ୍କ !

୪. ଶୁଖୁଥା ଯୁଦ୍ଧରତ୍ନ ଏଥୁଥାଜୁଥାଟା ରାଜ ଥାଘଜୁଦୁଜୁଶ, ଟିକ ଘଘ ଦୁଜୁଜୁଟା ସାଧୁଜ
ଜୁଜୀଦୁଙ୍କ, ଘଦୁଜୁଥାଥାଜ, ଜୁଦୁଦୁଜୁଟାଠାଟା, ଜୁଁଘାଦୁଙ୍କ, ଜୁଘଥାଥାଜ ଘଘଘଦୁଙ୍କ ଜୁଜୁଜୁଜୁ ଥାଥାଥା ଦୁଜୁଜୁ,
ସୁଜୁଜ ଜୁଥାଜୀଜୁଟା ଜୁଘଥାଠାଟା ଜୁଜୁଜୁଜୁଟାଜ ପାଘଘଥା, ଘଃଜୁଥାଜ ଥାଜୁଥାଜ ରାଜ ଥାଜୁଜୀଜୁଥାଥା,
ଥଦୁଜୁଦୁଜ-ଥାଜୁଜୁଜୁଟା ସାଧୁଥାଙ୍କ ଥାଜୁଜୀଜୁଜ ରାଜ ଦୁଥାଙ୍କ ଥାଥାଜୁଥାଜୁଟା ଦୁଜୁଜୁଜୁଟା ଘଘ,
ଟିକ ଘଘ ଜୁଟାଘଥା ଥାଥାଦୁଜୁଟା, ପୁଥାଜୁଜୁଜୁଜୁଟାଥାଥା ଜୁଜୁଜୁଜୁଟାଥାଥା ରାଜ ପୁଥାଥାଥା ଦୁଜୁଜୁ ଜୁଜୁଜୁଜୁଟା,
ଥାଥାଥା ଦୁଜୁଜୁଜୁଟାଥାଥାଘ ଘଜୁଜୁଜୁଜୁଟାଥାଥାଘ ଜୁଜୁଜୁଜୁଟାଥାଥା ଜୁଜୁଜୁଜୁଟାଥାଥା ଜୁଜୁଜୁଜୁଟାଥାଥା

[illegible]

[illegible]

देवनागरी में लिप्यन्तरण

9. धुमकुड़िया नु बिल्ली दगआ लगदम

(कवि – सय महादेव टोप्पो, हरमू बाईपास, कार्तिक उराँव चौक, राँची)

1. पतड़ा नु चियारी, धनु, टोंग'ए,
अखड़ा नु खे़ल, नगड़ा, ढोल, मुरली, ठेसका, भेंर
धुमकुड़िया गही चाःली नु बईसला, दउली, टोंग'ए ती,
कमआ लगियर उगता, चियारी, धनु, बल्लु, कुड़डी ही बेंट,
तेस्सा लगियर इंज्जो जल्ली, अंतर–खोतर गुड़था अरा भिरयो
मेद्दो गही टुंकी अरा डउड़ा नु इदी ती बग्गे उईया लगियर,
एन्ने बग्गे नम्हँय अज्जो–अज्जी, नाना–नानी, बड़ा–बड़ी बगर !!

2. अरा इन्ना आदिवासी जोंःख़र–पेल्लर ?
इबड़ा गुट्ठी ही अनचिन्हार टूड़पइत्त ही डहरेन बेद्दा लगनर,
टुंगरी नु लालटेंग मलता ढिबरी ही रम्फ बिलचा लगी बेसे,
इन्नलता सिमेट एड़पा ही मझी, पका एड़पा नु,
आर तमहँय पुरखर ही लूर बिल्लीन ठोक–ठोका नना लगनर,
जोक्क आःलर इसन, कलम, कूँची, कैमरा, पुथी, बही ओन्दोरका रअ़नर आर हेद्दे !!

3. आर एःरा लगनर – अखड़ा ता संगोठन, अईनता सकिस्ता,
पड़हा गही पुरखउता दव ढचर–सिकड़ी ही छितिछान मंज्जकन,
खे़ड्ड ही बेःचना, बाँस लेखे कया ही लुझकारना ही बछरका,
मुन्दा बोंग्गा मेलख़ा ता कुडु अरा मुहकल बेसे गंगवारना,
गुंगा डण्डी ही ख़रख़ना नु एवन्दा जोंःख़र–पेल्लर,
जोक्क आःलर तंगआ जेक्क जिनिसन, हहासन, डन्डीन नठारते एःरा लगनर !

4. इबड़ा गुट्ठी अम्बरना ही नेःत–घोख, आर गे नुंजआ लगी,
दिल्ली, मुंबई, कोलकाता, बंगलोर, चेन्नई, गुट्ठी शहर नु,
लूर धरचका चेण्ठर किर्रयर पद्दा, एःरर समाज ही ससईतन,
बुझूर–नखरआ लगनर ससईत ती उबार मना गे अरा बछरआ गे,
आर गे चैन मल्ला, पुरखउतन बछाबअ़ना अरा पुनन हूँ उईना,
अनदेसा एथेरआ लगी, अवंगे धुमकुड़िया नु इन्नलता जोंख़र,
ख़ेःल–केंदरा गने गिटार अस्सर, उलगुलान डण्डी पाःड़ा लगनर !!

5. पुथी, कलम, कूँची, कैमरा, कंप्यूटर, मोबाईल ती,
आर इन्दिर'ईम पुना बचआ लगनर, पुना गढ़आ लगनर,
आर रचआ लगनर, तंगआ बरना बेड़ा गे पुना बेलख़ा,
लग्गी, आर पुरखंर ती जोक्क लूःर, बुद्धी,
परम्परा, बिरासत, रीति–रिवाज
इन्नलता दरकार, ही संग्गे,
जिया, कया, पया अरा एख़ नु फुलङी ओदआ लगनर !!

6. तंगआ अयंग कत्था गही बक्क–मने अरा बेहवार ख़ोःजा लगनर,
नना लगनर शोध, देश–विदेश नु, सेमिनार नु तर्क उईया लगनर,
ईयाद उईके, सिरिफ बेःचना अड्डा मल रहचा धुमकुड़िया,
उज्जना जिनगी ही, उरमी नलख, आईन–कान्दुन, ढचर अरा नेःत–नेःग,
चिन्हाँ परचा ननतु'उ, आल–उज्जना सिखिरना ही अड्डा, धुमकुड़िया,
तली, तंगआ बउसा अरा नन्नर गही बउसन बुझुर–नखरना अड्डा,
एन्ने नु, एकासे नीक'ईम बओर – आदिवासी रिन भोक्को अरा गंवार !!

7. इन्नलता विज्ञान ती निन्दका सोच–घोख, तकनीक ही संग्गे,
एःम पुरखा नेगचार दोहोड़आ'दम, पचबालर ती गोहरारदम,
बछरका रअ़अन ई हरियर धरती, बछरका रअ़अन होरमा आःलर,
ताःका, अम्मे, सरगर ख़ल्ल–उखड़ी, परदा नेकआ उरमी जिया–जउँत,
धुमकुड़िया देवड़स गने पलकाँसना नेःत–नेःग नना लगदम, होरमर गे,
मलदव अरा दुक्खे ती बछरआ खतरी, भाख खण्डा'दम,
इन्ना एःम धुमकुड़िया नु, फीन बिल्ली दगआ लगदम !!

अपील / Apeel

कुँड़ुख़ (उराँव) भाषा–लिपि एवं संस्कृति के संरक्षण तथा संवर्द्धन में अपना योगदान दें

ज्ञात हो कि कुँड़ुख़ भाषा–भाषियों के लिए अब अपने तरीके का अपना वेब प्लेटफॉर्म आ चुका है। इसे अब दुनियां भर में इंटरनेट के माध्यम से kurukhtimes.com पर देखा जा सकता है। kurukhtimes.com की सामग्री विषयक तथ्य है कि इस वेब प्लेटफॉर्म पर कुँड़ुख़ भाषा–संस्कृति के विकास और संवर्द्धन के नजरिये से वह हर चीज उपलब्ध होगी, जो हम लाईब्रेरियों, पुराने आर्काईव अथवा आज के इंटरनेट दुनियाँ में ढूँढ़ते रहते हैं। इस वेबसाइट पर वर्तमान में कई स्थायी सेक्सन हैं, उदाहरणार्थ – नजरिया (Views), आलेख (Write up), दस्तावेज (Documents), लोक साहित्य (Folklore), समसामयिक व जानकारियाँ (Current Affairs & News Flash) आदि। YouTube.com/kurukhTimes भी शुरू किया गया है, जिसकी झलकियाँ आपको इस वेबसाइट पर मिलती है। यह वेब–माध्यम वर्तमान समय की मांग के अनुरूप है। इसमें सहयोगी बनें और अपना लेख एवं विचार kurukhtimes@gmail.com अथवा oraon.narayan@gmail.com के पते पर भेंजें या संयोजक (मो०न० 9771163804) से संपर्क करें।

– उप संपादक, कुँड़ुख़ टाईम्स (दैनिक वेब पत्रिका) – उप संपादक, कुँड़ुख़ टाईम्स (दैनिक वेब पत्रिका)

10. [illegible]

([illegible])

1. [illegible]

2. [illegible]

3. [illegible]

4. [illegible]

5. [illegible]

6. [illegible]

7. [illegible]

8. [illegible]

9. [illegible]

10. [illegible]

11. [illegible]

12. [illegible]

13. [illegible]

14. [illegible]

([illegible])

देवनागरी में लिप्यन्तरण

 10.. अखड़ा ता चाःचा पटनी

1. सन्नी कुना एःन रहचकन,
टटख़ा टोला ता अखड़न ईरकन,
पटनीन एःरर इन्ना एःन बुझुरकन,
ओहरे अखड़ा ता चाःचा पटनी।
2. पइरी–पुतबारी ख़द्दर,
जोंःख़र अरा पेल्लर ओक्कनर,
डण्डी पाःड़ोर, पद्दन सोहान ननोर,
ओहरे अखड़ा ता चाःचा पटनी।
3.. अखड़ा गहि लूर सिखिरआ गे,
उज्जना गहि डहरेन बुझुरआ गे,
डण्डी गहि महबन अख़आ गे,
ओहरे अखड़ा ता चाःचा पटनी।
4.. एकअम चन्ददो गहि बेड़ा रओ,
अखड़ा पटनी ती डण्डी मेन्दोरओ,
अनआ–मनआ हियाख़ोर डण्डी मेन्तारओ,
ओहरे अखड़ा ता चाःचा पटनी।
5. मण्डी बिअना गूटि सन्नी ख़द्दर,
ओक्कनर बेःचनर रिरयारनर,
खुड़ती ओनर जोंःख़र पेल्लर, अरगनर
अखड़ा बेःचा, ओहरे अखड़ा ता चाःचा पटनी।
6. तरा माःख़ा भेजा बेःचोर,
बेड़ा सिरे एड़पा किर्रोर,
बीड़ी अरगतेम नलख नना काःलोर,
ओहरे अखड़ा ता चाःचा पटनी।
7. पइरी मंज्जा ख़द्दर गहि बेःचना,
अखड़ा ता पटनी नू अरगना–एत्तना,
बेड़ा सिरे ओना–मोःख़ा गे अयोर गहि मेःख़ना,
ओहरे अखड़ा ता चाःचा पटनी।
8. लोहाड़ी ओनर सेयानर, काःनर पटनी ओक्का,
नंज्जका नलख गहि कत्थन कच्छनखरओर,
एःख़ा मंज्जका ती तंगआ नलख गे काःलोर,
ओहरे अखड़ा ता चाःचा पटनी।
9. करम, ख़द्दी परब नू ओरमर,
जोंःख़र–पेल्लर, अयंग–बंग्ग, पच्चो–पचगी अरा
ख़द्दर, नलना–तोःकना, अस्सना–पाःड़ना, बेःचनन
एःरनर पाहियर,
ओहरे अखड़ा ता चाःचा पटनी।
10. अक्कुन रअ़ना बेड़ा नू सरकार गहि स्कीम बरचा,
चाःचा गहि पटनिन तरकूटि ननर पुना पिण्डा कमचा,
पुरख़र गहि कमचका पटनिन स्कीम बरअर बिगड़ाचा,
ओहरे अखड़ा ता चाःचा पटनी।
11.. काःनर लूरकुड़िया अक्कुन ता ख़द्दर,
टूःड़ा–बचआ गे सिखरआ गा लगनर ख़द्दर,
पहें अखड़ा अरा पुरख़र गहि लूर मल धरचर,
ओहरे अखड़ा ता चाःचा पटनी।
12. टटख़ा टोलन कुँड़ख़र गहि पद्दा बाःचर,
लूरकुड़िया केरर तंगआ भखन हूँ मोधरर,
अखड़ा नू नलना तोःकना पाःड़नन हूँ अम्बियर,
ओहरे अखड़ा ता चाःचा पटनी।
13. परब नू अखड़ा बीचुर जुक्की मंज्जर,
तीःना ख़ाँःडुर एःरूर बग्गे मंज्जर,
तरकूटि नंज्जका पटनी खोबरार'ई, ईर गहि दसा एःरर,
ओहरे अखड़ा ता चाःचा पटनी।
14. पाःडुस गहि जिया घोख'ई
पुरख़ा पटनिन एःरना उइना दरा जोगाबअना,
अस्सना–पाड़ना, नलना–तोःकना, बेःचना–रिरयारना,
अयंग कत्था सिखिरना अरा दव–लूर सिखाबअना,
अखड़ा ता पुरखा बूझ अरा घोखन बुझूरनखरना,
मा नीम हुबड़न तिंग्गी, अखड़ा ता अबड़ा चाःचा पटनी।
ओहरे अखड़ा ता अबड़ा चाःचा पटनी।

(टूःडूस : सय भुनेश्वर उराँव, तिलसिरी, घाघरा, जिला : गुमला)

11. राष्ट्रीय षिक्षा नीति 2020 एवं मातृभाषा षिक्षा सह कुँड़ुख़ भाषा तोलोंग सिकि तथा धुमकुड़िया विषय पर तीन दिवसीय कार्यषाला सम्पन्न

दिनांक 12 मार्च से 14 मार्च 2020 तक ऐतिहासिक पड़हा जतरा खुटा शक्तिस्थल, मुड़मा, राँची में अवस्थित सांस्कृतिक भवन में तीन दिवसीय कार्यशाला मातृभाषा शिक्षा सह कुँड़ुख़ भाषा तोलोंग सिकि तथा धुमकुड़िया सम्पन्न हुआ। इस कार्यशाला में झारखण्ड, प. बंगाल, ओडिसा, छतीसगढ़ तथा पड़ोसी देश नेपाल से कुँड़ुख़ भाषा प्रेमी उपस्थित थे। यह कार्यषाला टाटा स्टील फाउण्डेशन, जमशेदपुर के तकनीकी सहयोग तथा अद्दी कुँड़ुख़ चा:ला धुमकुड़िया पड़हा अखड़ा (अद्दी अखड़ा), राँची एवं राजी पड़हा सरना प्रार्थना सभा, भारत, मुड़मा, राँची के संयुक्त संयोजन में सम्पन्न हुआ। इस कार्यशाला के उदघाटन समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में कार्मिक, प्रशासनिक सुधार एवं राजभाषा विभाग के प्रधान सचिव श्रीमती वंदना दादेल उपस्थित थीं। उद्घाटन समारोह की अध्यक्षता, विनोवा भावे विश्वविद्यालय, हजारीबाग के पूर्व कुलपति, एवं बिजनेस मैनेजमेंट विभाग, बी.आई.टी. मेसरा, राँची के प्रोफेसर डॉ. रविन्द्र नाथ भगत द्वारा सम्पन्न हुआ। उद्घाटन समारोह में सम्मानित अतिथि के रूप में टाटा स्टील फाउण्डेशन के एजुकेटिव अधिकारी श्री शिवशंकर कांडेयोंग, राजी पड़हा सरना प्रार्थना सभा के अध्यक्ष (प्रभारी) श्री विद्यासार केरकेट्टा, अद्दी कुँड़ुख़ चाला धुमकुड़िया पड़हा अखड़ा (अद्दी अखड़ा), राँची के अध्यक्ष श्री जिता उराँव एवं ग्राम मुड़मा (माण्डर थाना, राँची) के पहान श्री सिबु उराँव उपस्थित थे। प्रथम दिवस पर लोग रात्रि 8.00 बजे तक दूर देश आकर निबंधन कराया तथा एक दूसरे से परिचय करते हुए अगले दिन की तैयारी के लिए रात्रि विश्राम किया।

कार्यषाला के उदघाटन समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में कार्मिक, प्रशासनिक सुधार एवं राजभाषा विभाग, झारखण्ड की प्रधान सचिव श्रीमती वंदना दादेल द्वारा कार्यषाला में राष्ट्रीय षिक्षा नीति 2020 एवं मातृभाषा षिक्षा सह कुँड़ुख़ भाषा तोलोंग सिकि तथा धुमकुड़िया विषय पर अपना विचार प्रकट करते हुए।

कार्यशाला के पूर्व सामूहिक प्रार्थना से दिन का आरंभ हुआ। तत्पश्चात दिनांक को 13 मार्च 2022 को श्री महादेव टोप्पो (साहित्यकार) द्वारा – ''एःकना दिम तोःकना, कत्था दिम डण्डी अरा धुमकुड़िया'' विषय पर ज्ञानवर्द्धक व्याख्यान प्रस्तुत किया गया। उसके बाद डॉ. अभय सागर मिंज, सहायक प्राध्यापक, मानवशास्त्र विभाग, डी.एस.एस.एम.विश्वविद्यालय, राँची द्वारा –''विलुप्त होती भाषाएँ और उसको बचाने के उपाय'' विषय पर व्याख्यान प्रस्तुत किया गया। ततपश्चात् 11. 30 बजे से कार्यशाला का उद्घाटन सत्र आरंभ हुआ। अतिथियों का पुष्प गुच्छ से स्वागत किया गया। कार्यशाला का उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता डॉ० आर०एन० भगत के द्वारा किया गया। आयोजन समिति के अध्यक्ष श्री विद्यासागर केरकेट्टा जी द्वारा समाज की बातों को क्रमवार रखा गया। अध्यक्ष द्वारा भी समूह की बातों को एक संजोकर प्रस्तुत किया गया। श्री लवहरमन उराँव ने जनगणना विषय की महत्ता पर व्याख्यान दिया।

कार्यषाला की मुख्य अतिथि श्रीमती वंदना दादेल एवं अन्य।

दूसरे दिन 14 मार्च को डॉ० नारायण उराँव द्वारा कुँड़ुख़ भाषा विज्ञान तथा तोलोंग सिकि लिपि विषय पर विस्तृत जानकारी दी गई तथा डॉ० बैजन्ती उराँव द्वारा आदिवासी खान–पान एवं पोषक तत्व विषय पर शोध निबंध प्रस्तुत किया गया। अंत में श्री सरन उराँव द्वारा 12 महीना 13 रागवाली कहावत को संपुष्ट करते हुए अपना कार्यक्रम प्रस्तुत किया।

कार्यषाला का समापन सत्र डॉ० करमा उराँव की अध्यक्षता में सम्पन्न हुअ। उन्होंने कहा – एक पूर्ण एवं विकसित भाषा के लिए लिपि आवश्यक है।

12. वर्ष : 2021–22

ट्राईबल कल्चरल सोसाईटी (टाटा स्टील फाउण्डेशन की अंगीकृत इकाई) जमशेदपुर द्वारा वर्ष 2021–22 में कुँड़ुख़ भाषा एवं तोलोङ सिकि के संरक्षण तथा विकास हेतु सिसई थाना क्षेत्र में अवस्थित छोटे–छोटे कुँड़ुख़ भाषा शिक्षण केन्द्र को अपने शिक्षण कार्य योजना से जोड़कर मदद किया जा रहा है। इसके तहत, सात पड़हा कुँड़ुख़ लूरकुड़िया, पलमी, भण्डरा, प्रस्तावित कुँड़ुख़ लूरकुड़िया, शिवनाथपुर, सिसई, कार्तिक उराँव आदिवासी कुँड़ुख़ विद्यालय, छारदा, सिसई, कार्तिक उराँव आदिवासी कुँड़ुख़ विद्यालय, मंगलो, सिसई, वीर बुधू भगत कुँड़ुख़ लूरकुड़िया, छोटका सैन्दा तथा धुमकुड़िया, सैन्दा, सिसई मुख्य रूप से है।

धुमकुड़िया (परम्पारिक सामाजिक पाठशाला) सैन्दा, सिसई

वीर बुधू भगत कुँड़ुख़ विद्यालय, टुकूटोली सैन्दा, सिसई

सात पड़हा कुँड़ुख़ लूरकुड़िया, पलमी, भण्डरा, लोहरदगा

कार्तिक उराँव आदिवासी कुँड़ुख़ विद्यालय, छारदा, सिसई

कार्तिक उराँव आदिवासी कुँड़ुख़ विद्यालय, मंगलो, सिसई

प्रस्तावित कुँड़ुख़ विद्यालय, शिवनाथपुर, सिसई

13. / मुद्ध कत्थसिञा (मुख्य समाचार)

टी०सी०एस० के सहयोग से 18 कुँड़ुख़ भाषा शिक्षण केन्द्र, चक्रधरपुर क्षेत्र में चलाया जाता है, जिसे उराँव सरना समिति मदद करता है।

राजी पड़हा सरना प्रार्थना सभा, भारत तथा अद्दी अखड़ा, राँची द्वारा इस बैठक में तीन दिवसीय कार्यशाला के संबंध में सहमति बनी।

कुँड़ुख़ कत्थ तोलोंग सिकि दिवस सप्ताह का आयोजन संत इस्तानिस्लास उच्च विद्यालय, पतराटोली, लोहरदगा में आयोजित हुआ। इस अवसर पर फा० अगुस्तिन केरकेट्टा एवं डॉ० नारायण उराँव उपस्थित हुए।

कुँड़ुख़ कत्थ तोलोंग सिकि दिवस सप्ताह का आयोजन लौह नगरी टाटा जमशेदपुर के पुराना सीताराम डेरा में आयोजन हुआ। इस अवसर पर टी०सी०एस० के एक्जेक्यूटिव ऑफिसर श्री शिवशंकर कांडेयोंग, डॉ० नारायण उराँव एवं उराँव समाज समिति, सीताराम डेरा के सदस्य उपस्थित थे।

टाटा स्टील फाउण्डेशन, जमशेदपुर के तकनीकी सहयोग से अद्दी कुँड़ुख़ चाःला धुमकुड़िया पड़हा अखड़ा, राँची तथा राजी पड़हा सरना प्रार्थना सभा, भारत, मुड़मा, राँची द्वारा तीन दिवसीय कार्यशाला आयोजित हुआ जिसमें कार्मिक, प्रशासनिक सुधार एवं राजभाषा विभाग, झारखण्ड की प्रधान सचिव श्रीमती वंदना दादेल मुख्य अतिथि के समक्ष कुँड़ुख़ भाषा शिक्षा पर विचार रखते हुए डॉ० बन्दे खलखो।